केवल आप के लिये
गांव–गांव शहर–शहर देश दुनियां में अपनों तक पहुंचाना है तो भारतीय बस्ती दैनिक वेब www.bhartiyabasti.com और उसका छपा संस्करण सबसे बेहतर माध्यम
सम्पर्क-bhartiyabasti@gmail.com
मो0 9450567450| 9336715406

दैनिक भारतीय बस्ती

भारतीय बस्ती
www.bhartiyabasti.com
के लिये विज्ञापन बुक कराये।
विचार, प्रचार का सशक्त माध्यम
सम्पर्क
मो0 9450567450
9336715406

भारतीय बस्ती आमंत्रण मूल्य 2रूपया

R.N.I. 38784/81 डाक पंजीकरण सं0 B.S.T 59 बस्ती, वर्ष :45 अंक 210 मंगलवार 20 फरवरी 2024 (बस्ती संस्करण) बस्ती एवं अयोध्या–फैजाबाद से एक साथ प्रकाशित पृष्ठ :4मूल्य:3.00 रुपया www.bhartiyabasti.com

पीएम मोदी ने किया 10 लाख करोड़ की परियोजनाओं का शुभारंभ बोले- यूपी में अब व्यापार, विकास और विश्वास का माहौल

लखनऊ (आभा)। मुझे यूपी के सामर्थ और डबल इंजन सरकार के परिश्रम पर पूरा विश्वास है। मैं योगी जी को विशेष बधाई देता हूं। हर हिन्दुस्तानी को गर्व होता है कि यूपी ने ठान लिया है कि वो एक ट्रिलियन डालर की इकोनॉमी बनेगा। देश के सभी राजनीतिक दलों से कहूंगा कि राजनीति छोड़िए और यूपी से सीखिए। आप कितने ट्रिलियन डॉलर की इकोनॉमी अपने राज्य को बनाएंगे, ये संकल्प करके मैदान में आइए। देश तभी आगे बढ़ेगा जब यूपी की तरह हर राज्य बड़े सपने और संकल्प लेकर चल पड़ेगा। कहा कि उद्योग जगत के साथियों के लिए यूपी में अनंत अवसर की बेला है। आपने कभी सोचा नहीं होगा उतनी तेजी से यूपी अपने सारे संकल्पों को पूरा कर रहा है। ये बातें प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सोमवार को इंदिरा गांधी प्रतिष्ठान में आयोजित ग्राउंड ब्रेकिंग सेरेमनी के चौथे संस्करण के उद्घाटन समारोह के दौरान कही। प्रधानमंत्री ने रिमोट का बटन दबाकर 10 लाख करोड़ रुपए से अधिक की 14 हजार से ज्यादा परियोजनाओं

का शुभारंभ किया। इस दौरान उन्होंने चलचित्र के माध्यम से बदलते उत्तर प्रदेश की झलक भी देखी।

अपने उद्बोधन में प्रधानमंत्री ने कहा कि सात वर्ष पहले हम सोच भी नहीं सकते थे कि यूपी में निवेश और नौकरियों को लेकर ऐसा माहौल बनेगा। पहले चारों तरफ अपराध, दंगे, छीनाझपटी यही खबरें आती रहती थीं। उस दौरान अगर कोई कहता कि यूपी को विकसित बनाएंगे तो शायद कोई सुनने को भी तैयार नहीं होता। आज लाखों करोड़ का निवेश उत्तर प्रदेश में उतर रहा है। प्रधानमंत्री ने कहा कि आज उत्तर प्रदेश में हजारों प्रोजेक्ट पर काम शुरू हो रहा है। ये उद्योग यूपी की तस्वीर बदलने वाले हैं। उत्तर प्रदेश में बीते सात साल में रेड टेप कल्चर को खत्म करके रेड कार्पेट कल्चर का माहौल बना है। यूपी में ना केवल क्राइम कम हुआ है, बल्कि बिजनेस कल्चर का विस्तार भी हुआ है। बीते सात साल में यूपी में व्यापार, विकास और विश्वास का माहौल बना है। यहां आए सभी निवेशकों के बीच आशावाद दिख रहा है।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अपने अल्प समय के उद्बोधन में प्रधानमंत्री की जमकर तारीफ की और कहा कि वह हर नामुमकिन को मुमकिन बना रहे हैं।

अमेठी पहुंची भारत जोड़ो न्याय यात्रा में उमड़े लोग

अमेठी (आभा)। भारत जोड़ो न्याय यात्रा लेकर सोमवार को अमेठी पहुंचे सांसद राहुल गांधी ने 35 किलोमीटर का सफर 1.29 घंटे में पूरा किया। खुली लाल रंग की जीप में राहुल गांधी ने 724 दिन बाद रोड शो किया। दरअसल, वर्ष 2022 के विधानसभा चुनाव में 25 फरवरी को राहुल गांधी ने प्रियंका के साथ रोड शो किया था।

सोमवार की दोपहर दो बजे का वक्त, अमेठी में ककवा रोड के पास लोगों को हुजूम लगा हुआ था। कोई कांग्रेस के टीशर्ट में नजर आ रहा था तो कोई कांग्रेस का झंडा लिए था। स्वागत के इंतजार में खड़े

सुल्तानपुर के प्रभात, गोंडा के तरूण पटेल के साथ अमेठी के राजन, राकेश व इंतियाज आदि का कहना था कि यात्रा लोगों के लिए हैं, लोगों के हितों के लिए हैं।

करीब ढाई बजे जैसे ही यात्रा के अमेठी की सीमा में दाखिल होने की जानकारी सामने आई, हर कोई नारेबाजी करने लगा। पुलिस लाइन मोड़ पर एकत्र कार्यकर्ताओं का हुजूम ओवरब्रिज तक एकत्र हो गया। यात्रा के आते ही देखो–देखो कौन आया.. का नारा लगने लगा। राहुल गांधी सबका अभिवादन स्वीकार करते हुए आगे बढ़ रहे थे। कोई अंगवस्त्र पहना रहा था तो कोई फूलों की माला। लोग काफी खुश दिखे।

5 सूत्रीय मांगों को लेकर सफाईकर्मियों ने भेजा ज्ञापन

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती । उत्तर प्रदेश पंचायती राज ग्रामीण सफाई कर्मचारी संघ प्रदेश नेतृत्व के आवाहन पर संघ जिलाध्यक्ष अजय कुमार आर्य के नेतृत्व सफाई कर्मियों ने 5 सूत्रीय मांगों को लेकर जिलाधिकारी के प्रशासनिक अधिकारी , जिला पंचायत राज अधिकारी के माध्यम से मुख्यमंत्री, निदेशक पंचायती राज और अपर मुख्य सचिव पंचायती राज विभाग को ज्ञापन सौंपा।

ज्ञापन सौंपने के बाद संघ जिलाध्यक्ष अजय कुमार आर्य ने कहा कि सफाई कर्मी अपने दायित्वों का निष्ठा से पालन कर रहे हैं इसके बावजूद उनका तरह– तरह से उत्पीड़न किया जा रहा है। कहा कि सफाई कर्मियों का वेतन माह के पहली तारीख को उनके खाते में भेजे जाने, साफ सफाई हेतु उपकरण साईकिल ठेला, कम्बोड जूता, ग्लव्स, मास्क, उपलब्ध कराने, आदेश के कम में अन्य ग्रामों से सम्बद्ध सफाई कर्मियों को उनके तैनाती स्थल पर भेजे

जाने, एसीपी से वंचित सफाई कर्मियों को जोडे जाने, दिव्यांग सफाई कर्मियों का स्थायीकरण एवं भत्ता आदि की मांग वर्षो से लम्बित है। उस पर कोई प्रभावी कार्यवाही नहीं हो रही है। ज्ञापन सौपने वालों में ग्रामीण सफाई कर्मचारियों को आन लाइन उपस्थिति से मुक्त रखे जाने, विभागीय सेवा नियमावली बनाये जाने, सफाई कर्मियों के पदोन्नति की व्यवस्था किये जाने, सफाई कर्मियों की मृत्यु होने पर मृतक आश्रित को योग्यता के आधार पर नौकरी देने, पुरानी पेंशन बहाल किये जाने आदि की मांग शामिल है।

ज्ञापन देने वालों में अशोक कुमार दूबे, पेशकार, राम कृपाल चौधरी, अमित कुमार चक्रवर्ती, बलराम यादव, मो. कलीम, मुकेश मिश्र, असलम अंसारी, हनुमान प्रसाद, महेन्द्र प्रताप, बजरंगी, राम प्रकाश चौधरी, बुधईराम, लाल बहादुर, शेषराम वर्मा, जसवन्त कुमार, शशिकात, महेन्द्र बुधई प्रसाद, लाल बहादुर, महेन्द्र कुमार, हनुमान शरण, आदि शामिल रहे।

एचआईवी, एड्स नियत्रंण पर कार्यशाला में दिया जानकारी

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती । उत्तर प्रदेश राज्य एड्स नियंत्रण सोसायटी, के सहयोग से जिला एड्स नियंत्रण समिति में मेनस्ट्रीमिंग के अंतर्गत एचआईवी, एड्स नियत्रंण हेतु मुख्य विकास अधिकारी जयदेव सी.एस. की अध्यक्षता में जनपद स्तरीय उन्मुखीकरण कार्यशाला कलेक्ट्रेट सभागार में आयोजित हुआ। कार्यशाला का शुभारंभ मुख्य विकास अधिकारी ने दीप प्रज्वलित कर किया। उन्होने संबंधित विभागों के अधिकारियों को निर्देशित किया है कि समन्वय स्थापित कर आम लोगों को एचआईवी/एड्स के नियंत्रण हेतु जागरूक करें।

अपर जिला न्यायाधीश/जिला विधिक सेवा प्राधिकरण रजनीश कुमार मिश्रा ने एचआईवी/एड्स अधिनियम, 2017 पर चर्चा करते हुए सम्पूर्ण धाराओं से लोगों को अवगत कराया। उन्होने बताया कि यदि कोई व्यक्ति इस अधिनियम का उल्लंघन करता है, तो कम से कम 3 माह का कारावास, जिसे 02 साल तक बढ़ाया जा सकता है एवं 1 लाख तक का जुर्माना अथवा दोनो हो सकता है।

मुख्य चिकित्साधिकारी डा. रमाशंकर दूबे ने बताया कि जनपद स्तर पर विभिन्न विभागों के साथ समन्वय स्थापित कर एचआईवी/एड्स मुक्त उत्तर प्रदेश बनाने के साथ ही एचआईवी संक्रमितों के प्रति सकारात्मक व्यवहार को बढ़ावा देने के उद्देश्य से जनपद के 05 विकास खण्डों में मेनस्ट्रीमिंग कार्यक्रम के अन्तर्गत उन्मुखीकरण कार्यशाला का आयोजन किया जाएगा।

कार्यशाला के दौरान प्रभारी जिला क्षयरोग अधिकारी डा. एके गुप्ता, प्रमुख अधीक्षक जिला चिकित्सालय, मुख्य चिकित्सा अधीक्षक जिला महिला चिकित्सालय, मुख्य चिकित्सा अधीक्षक जिला क्षयरोग चिकित्सालय ने एचआईवी/एड्स विषय पर विस्तृत जानकारी दिया और सभी से अपेक्षा की कि ब्लॉक स्तर पर होने वाले कार्यशालाओं के आयोजन में सहयोग प्रदान करें। कलस्टर प्रोग्राम मैनेजर, दिशा यूनिट अखिलेश कुमार सिंह ने एच03आई0वी/एड्स पर चर्चा करते हुए यौन जनित रोगों के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दिया।

कार्यशाला का संचालन करते हुए ग्रामीण विकास सेवा समिति के सचिव अम्बुज कुमार यादव ने बताया कि इस कार्यशाला में जनपद के विभिन्न विभागों के माध्यम से आते संवेदनशील विकास खण्ड को चिन्हित कर बाल विकास परियोजना अधिकारी, मुख्य सेविकाओं, ब्लाक स्तरीय सुपरवाइजर, आंगनबाड़ी कार्यकर्ता, आशा बहू, आशा संगिनी, एएनएम0एम0, ग्राम पंचायत अधिकारी/ग्राम विकास अधिकारी तथा प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों को प्रशिक्षित किया जाएगा।

इस दौरान दिशा यूनिट के सुभाष चन्द्र यदुवंशी, अनुपम शुक्ला सहित सम्पूर्ण सुरक्षा केन्द्र, पीपीटीसीटी, ओएसटी सेन्टर, ब्लड बैंक, विहान, अहाना, लिंक वर्कर स्कीम परियोजना, यूपीएनपी प्लस, लक्षित हस्तक्षेप परियोजना, एआरटी सेन्टर, जिला प्रोबेशन कार्यालय, जिला कारागार के प्रतिनिधि एवं कार्यकर्ता तथा विभागीय अधिकारीगण उपस्थित रहें।

समाधान दिवस 20 को

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती । जिला स्तरीय सम्पूर्ण समाधान दिवस जिलाधिकारी की अध्यक्षता में 20 फरवरी मंगलवार को 10 बजे से रूधौली तहसील में आयोजित किया जायेगा। उक्त जानकारी एडीएम कमलेश चन्द्र ने दी है। उन्होने बताया कि सम्पूर्ण समाधान दिवस में सभी जिला स्तरीय अधिकारी भाग लेंगे।

604 किसानों में पम्पसेट का वितरण

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। सदर ब्लाक के सामने आयोजित एक कार्यक्रम में लघु सिंचाई विभाग की ओर से 604 किसानों को पम्पसेट का वितरण किया गया। हरैया विधायक अजय सिंह ने कहा किसानों को समृद्ध करना है तो उन्हे संसाधनों से लैस करना होगा। उत्तर प्रदेश सरकार की अनेक योजनायें लगातार किसानों को मजबूती प्रदान कर रही हैं।

उन्होने कहा केन्द्र व उत्तर प्रदेश सरकार ने विकसित भारत के एजेण्डे पर कार्य करना शुरू कर दिया है। यह तभी संभव है जब कृषि क्षेत्र को मजबूत किया जाये। किसानों की आर्थिक स्थिति अच्छी होगी तो भारत स्वतः विकसित राष्ट्रों में आ जायेगा। सांसद प्रतिनिधि जगदीश शुक्ला ने सरकार की योजनाओं की सराहना की। ब्लाक प्रमुख राकेश श्रीवास्तव व साऊघाट प्रमुख अभिषेक कुमार, सिंचाई बन्धु के अध्यक्ष गजेन्द्र मणि त्रिपाठी ने सरकारी योजनाओं के बारे में विस्तार से जानकारी दी जो किसानों से सम्बन्धित हैं।

इस अवसर पर एसोसियेशन ऑफ बोरिंग टेकिनीशियन लघु सिंचाई विभाग के अध्यक्ष सुबाष व मंत्री राहुल श्रीवास्तव ने आये हुये किसानों का आभार जताते हुये कहा कि सरकार द्वारा संचालित सभी योजनाओं का लाभ किसानों को मिलेगा। एक्सईएन सुबाष चन्द, एई गरिमा द्विवेदी, टीकम सिंह, दिलेरप कुमार कनौजिया, अम्बुज श्रीवास्तव आदि मौजूद रहे। जयप्रकाश, कृष्णचन्द पाण्डेय, रामकुमार, इन्द्रमती, मंगरू, राजेश कुमार, रामशंकर, गुलाबी देवी, रामबन, जगतनरायन, सुहेल अहमद, रामकुमार, हरिश्चन्द चौधरी, महमूद अहमद, रामसेवक, अनिरूद्ध सिंह, अजय शुक्ला सहित तमाम किसान लाभान्वित हुये।

कांग्रेस नेता महेन्द्र ने तिरंगा झण्डे के बारे में मांगी जानकारी

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती । उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी सूचना का अधिकार विभाग के प्रदेश महासचिव एवं बस्ती, गोरखपुर मण्डल के प्रभारी महेन्द्र श्रीवास्तव ने जिलाधिकारी/ जन सूचना अधिकारी से तीन बिन्दुओं पर सूचना अधिकार के तहत जानकारी मांगी है। उन्होने जानना चाहा है कि वर्ष 2023 में स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर संस्कृत मंत्रालय भारत सरकार द्वारा निर्देशित हर घर तिरंगा अभियान के तहत बस्ती के समस्त ब्लाकों में कुल मिलाकर कितने तिरंगे झण्डे लगाये गये थे और प्रति झण्डे की क्या लागत आयी थी।

कांग्रेस नेता महेन्द्र श्रीवास्तव ने पूंछा है कि जनपद में ब्लाकवार चलने वाले सिलाई केन्द्रों की कुल कितनी संख्या है और प्रशिक्षुओं की कितनी संख्या है। केन्द्रों पर सरकार द्वारा कौन–कौन सी निःशुल्क सुविधायें उपलब्ध करायी जाती हैं और एक सिलाई केन्द्र पर शासन द्वारा कितना धन व्यय किया जाता है। सिलाई केन्द्रों पर कार्यरत महिलाओं को कितना मानदेय भुगतान किया जाता है और उसकी प्रक्रिया क्या है।

परिषदीय विद्यालयों में चोरी की घटनाओं से शिक्षकों में रोषः सौंपा ज्ञापन

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती । परिषदीय विद्यालयों में लगातार चोरी की घटनाओं से शिक्षक परेशान हैं और सम्बंधित थानों में मुकदमें भी दर्ज नहीं किये जा रहे हैं। इन सवालों को लेकर सोमवार को उत्तर प्रदेशीय प्राथमिक शिक्षक संघ के जिला मंत्री बालकृष्ण ओझा के नेतृत्व में शिक्षकों के एक प्रतिनिधि मण्डल ने जिलाधिकारी के प्रशासनिक अधिकारी और पुलिस अधीक्षक के पी.आर.ओ. को ज्ञापन सौंपा। मांग किया कि परिषदीय विद्यालयों में लगातार चोरी की घटनाओं को पुलिस प्रशासन द्वारा नजर अन्दाज किया जा रहा है। मुकदमा न दर्ज होने की स्थिति में प्रधानाध्यापक विवशता में रजिस्टर्ड पत्र भेजते हैं उस पर भी कोई कार्रवाई नहीं हो रही है।

ज्ञापन सौंपने के बाद संघ के जिला मंत्री बालकृष्ण ओझा ने बताया कि उन्हें जानकारी दी गई है कि सल्टौआ विकास खण्ड क्षेत्र के पूर्व माध्यमिक विद्यालय बालेडाही, बसडिलिया, रूधौली विकास खण्ड क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालय कुचुरूआ,

–पुलिस दर्ज नहीं करती मुकदमें, घटनाओं के खुलासे की मांग

अठदेउरा और पूर्व माध्यमिक विद्यालय पैडा और कूही चौराहा स्कूलों से चोर मध्यान्ह भोजन का राशन, बरतन, गैस सिलेन्डर आदि चुरा ले गये। इससे मध्यान्ह भोजन प्रभावित हो रहा है। स्थानीय पुलिस स्कूलों में हो रही चोरी की घटनाओं पर गंभीर नहीं है।

संघ के जिला कोषाध्यक्ष दुर्गेश यादव ने मांग किया कि चोरी की घटनाओं का मुकदमा दर्ज कराने के साथ ही उनका शीघ्र खुलासा कर सामानों की बरामदगी करायी जाय। ज्ञापन देने वालों में जिला उपाध्यक्ष सुधीर तिवारी, प्रवीन श्रीवास्तव, संयुक्त मंत्री राजेश गिरी, हरेन्द्र यादव, सन्तोष मिश्र, वीरेन्द्र शुक्ल, मुरलीधर, आशाराम यादव, विवेक सिंह, सर्वेश यादव, सनद पटेल, अखिलेश पाण्डेय, रवि प्रताप सिंह, शिवरतन, रामभवन यादव, विजय राव के साथ ही अनेक शिक्षक और संघ पदाधिकारी शामिल रहे।

विज्ञान, कला प्रदर्शनी में दिखी छात्रों की प्रतिभा

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। न्यू इकरा पब्लिक स्कूल रहमतगंज गांधीनगर बस्ती में सोमवार को विज्ञान एवं कला प्रदर्शनी का प्रदर्शन किया गया। डायरेक्टर अयाज अहमद प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुये छात्रों से प्रोजेक्ट के बारे जानकारी साझा की। कहा कि छात्र ऐसे विषय के बारे में सोचे जिससे लोगों का जीवन सुधरे और रोजगार का सृजन भी हो।

कलास 4 से कलास 8 के बच्चे जिनमे नम्रआ शोएब,अदिति ,सय्यद असद,मनहा अदीब, सबा खातून,रूहमा खान,तहसीन शावेज खान,फैसल ,उममे कुलसुम,जिया महनाज, आयान खान , सुमैया, अफिया आफताब,परी श्रीवास्तव, माज, इबाद,सोबन,जीशान, जुनैद, नम्रा, नाहिद, उजमा,फरहान,दिलकश, अरीबा, उजैर,उजैफ, अलीशा मुस्तफा,नदिया , सैम अब्बास,आयान खान, उम्मे हबीबा,इफरा अंजुम,फहीमा खान,अबू, हुजैफा,मोहम्मद फैजान,इकरा चौधरी, अक्सा,जैनब सिद्दीकी,आरजू,खदीजा, अयमान अहमद, जैद मानसी पाण्डेय आदि ने प्रोजेक्ट बनाया।

इस मौके पर प्रबंधक डा अजीज आलम द्वारा सर्वश्रेष्ठ प्रोजेक्ट बनाने वाले बच्चो को पुरस्कार देकर प्रोत्साहित किया गया । बच्चो द्वारा विज्ञान में वाल्कनो , सोलर सिस्टम ,इलेक्ट्रिक सर्किट, ड्रेनेज सिस्टम,सिंपल सर्किट, आदि एवम नेशनल एंबलम सिंबल, ट्राइकलर फ्लैग,यूनियन टेरिटोरिस,इंडियन स्टेट्स , क्रापट में बच्चो ने कैंडल स्टैंड,वाटर फाउंटेन, बटरफलाई हाउस, कार्टून काईट,सुंदर थाल,पिकॉक और मंडला पेंटिंग मिरर बनाया । जिसमे सभी बच्चो ने उनके द्वारा बनाए गए प्रोजेक्ट के बारे में बताया। इस मौके पर न्यू इकरा पब्लिक स्कूल की प्रधानाचार्या जेबा शाहीन,अरिबा मैम,अंजू मैम,तस्लीम मैम राजिया सुल्ताना मैम कुटबुद्दीन सिर, ऐमन सिर,हाफिज शहादत उपस्थित रहे।

–न्यू इकरा पब्लिक स्कूल में लगी प्रदर्शनी, छात्रों को पुरस्कृत कर बढाया हौसला

बस्ती में ग्राउण्ड ब्रेकिंग सेरेमनी में 1546 करोड़ रूपये के निवेश हेतु 112 उद्यमी तैयार

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती । ग्राउण्ड ब्रेकिंग सेरेमनी में रू0 1546 करोड़ के 112 उद्योग तैयार हो गये है। इसमें लगभग 6568 लोगों को रोजगार प्राप्त होगा। उल्लेखनीय है कि जनपद में कुल रू. 14232.85 करोड़ का 286 इकाइयों द्वारा पूजीनिवेश के लिए एमओयू साइन किया गया है। कलेक्ट्रेट सभागार में आयोजित समारोह मे लखनऊ में आयोजित हुए कार्यक्रम का सीधा प्रसारण दिखाया गया, जिलाधिकारी अंद्रा वामसी एवं सीडीओ जयदेव सीएस द्वारा लाभार्थियों को टूलकिट का वितरण किया गया। इसमें विश्वकर्मा श्रम सम्मान योजनान्तर्गत शारदा, सुमन यादव, दिव्या मिश्रा, कु. निशा एवं माधुरी शर्मा तथा एक जनपद एक उत्पाद योजनान्तर्गत हरि मंगल, परवेज, मसूर अहमद, जुगेश कुमार गौतम, राम सवारे एवं अरविन्द कुमार को टूलकिट प्रदान किया गया।

जनपद बस्ती से इन्दिरा गाँधी प्रतिष्ठान लखनऊ में प्रतिभाग करने हेतु 39 निवेशकों को आमंत्रित किया गया है। जनपद में ग्राउण्ड ब्रेकिंग सेरेमनी 4.0 में पशुपालन विभाग में 03 इकाइयों द्वारा रू0 03.00 करोड़, चिकित्सा शिक्षा विभाग की 04 इकाइयों द्वारा रू0 42.00 करोड़, दुग्ध विकास विभा ग की 2 इकाई द्वारा रू0 22.25 करोड़, चिकित्सा स्वास्थ्य की 03 इकाईयों द्वारा रू0 55.00 करोड़, एमएसएमई विभाग 39 इकाई द्वारा रू0 394.50 करोड़, खाद्य एवं आपूर्ति विभाग की 01 इकाई द्वारा रू0 05 करोड़, उद्यान विभाग की 26 इकाईयों द्वारा रू0 235.50 करोड़, प्राविधिक शिक्षा विभाग की 15 इकाइयों द्वारा रू0 76.05 करोड़, आईटी इलेक्ट्रानिक विभाग की 1 इकाई द्वारा रू0 01.50 करोड़, पर्यटन विभाग की 08 इकाईयों द्वारा रू0 150.20 करोड़, वन विभाग के अन्तर्गत 01 इकाई द्वारा रू0 01.00 करोड़, उ0प्र0राज्य औद्योगिक विकास प्राधिकरण की 04 इकाईयों द्वारा रू0 335 करोड़, एडिसनल सोर्स आफ इनर्जी विभाग की 01 इकाई द्वारा 102.70 लाख, सहकारिता विभाग की 01 इकाई द्वारा रू0 41.00 करोड़, हैण्डलूम एवं टैक्सटाइल की 01 इकाई द्वारा 01.00 करोड़, मत्स्य विभाग की 01 इकाई द्वारा रू0 01.00 करोड़ तथा आवकारी विभाग की 01 इकाई द्वारा रू0 80.00 करोड़ का पूँजीनिवेश किया जा रहा है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट 4.0 पूरे उत्तर प्रदेश में 10 लाख करोड़ रूपये से अधिक लागत की 14000 परियोजना का शुभारम्भ इन्दिरा गाँधी प्रतिष्ठान गोमतीनगर लखनऊ से किया गया, जिसका सजीव प्रसारण कलेक्ट्रेट सभागार तथा तहसीलों में देखा गया। प्रधानमंत्री ने कहा कि इन परियोजनाओं से लोगों से रोजगार मिलेगा। यूपी को 1 ट्रिलियन डालर की अर्थ व्यवस्था बनाने में अहम भूमिका होगा। आज पूरी दुनिया मोदी की गारंटी की बहुत चर्चा कर रही है, यह मोदी की गाड़ी प्रत्येक लाभार्थियों को सरकार द्वारा चलायी जा रही समस्त योजनाओं का लाभ दें रही है।

इस अवसर पर सीडीओ जयदेव सीएस, उपायुक्त उद्योग हरेंद्र प्रताप, चैंबर का इंडस्ट्री के अध्यक्ष अशोक कुमार सिंह, महासचिव हरिश्चंद्र शुक्ला, अनिल सिंह रैकवार, उद्यमी अंकित सिंह, अनूप तिवारी, ईश्वर चंद्र मिश्र, पुलिस क्षेत्राधिकारी विनय सिंह चौहान, अधिशासी अभियंता विद्युत महेंद्र मिश्रा, मनोज कुमार, ज्ञान प्रकाश, सहायक निदेशक रेशम रितेश सिंह, लीड बैंक मैनेजर आरएन मौर्य, जिला कृषि अधिकारी डॉ. राज मंगल चौधरी, सहायक आयुक्त व्यापार कर प्रभाकर सरोज सहित अन्य विभागीय अधिकारी तथा उद्यमी उपस्थित रहे।

एलआईसी हरैया के नये भवन का उदघाटन

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। भारतीय जीवन बीमा निगम हरैया कार्यालय के नये भवन का उद्घाटन सोमवार को एलआईसी गोरखपुर मण्डल के वरिष्ठ मण्डल प्रबंधक जय सिंह चौहान ने फीता काटकर किया। उद्घाटन कार्यक्रम को संबोधित करते हुए वरिष्ठ मंडल प्रबंधक ने कहा कि हरैया शाखा गोरखपुर मंडल में अग्रणी शाखा है यहां के अभिकर्ता साथी एलआईसी को निरंतर नहीं ऊंचाइयों पर ले जा रहे हैं। ग्राहकों को अच्छी सुविधा मिल सके इस उद्देश्य से एलआईसी को नए कार्यालय में शिफ्ट किया गया है जो कि आधुनिकता से लैस है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा एलआईसी की की गई तारीफ के लिए धन्यवाद दिया। कहा कि एलआईसी की आय पिछले वर्ष की तुलना में काफी बढ़ गई है क्योंकि मौजूदा समय में जो नई योजनाएं

प्रारंभ की गई है वह ग्राहकों को बहुत पसंद आ रही हैं। उद्घाटन कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे बस्ती शाखा के मुख्य प्रबंधक प्रवीण कुमार सक्सेना ने कहा कि भारतीय जीवन बीमा निगम बीमा क्षेत्र में भारत सरकार का सबसे बड़ा वित्तीय संस्थान है जो कि बचत के साथ सुरक्षा प्रदान करता है। उन्होंने बीमा व्यवसाय और आगे बढ़ाने के लिए हर संभव प्रयास पर जोर दिया।

कार्यालय के उद्घाटन अवसर पर गोरखपुर मंडल के विपणन प्रबंधक संजीव गर्ग, हरैया शाखा के प्रबंधक विनोद कुमार आर्य, विकास अधिकारी प्रेम शंकर ओझा, आशुतोष श्रीवास्तव, राम नारायण मिश्र, अनिल कुमार मिश्र, आई के वर्मा, शैलेंद्र वर्मा, अभिकर्ता राम विनय पाण्डेय, वीरेंद्र कुमार दूबे, गणेश कुमार, शिव शंकर, राम प्रकाश त्रिपाठी, ग्राहक सुनील त्रिपाठी, राजेश सिंह, संतोष कुमार आदि उपस्थित रहे।

"मुझे अखबार निकालने दो तो मै इस बात की परवाह नहीं करता कि कौन धर्म का नियामक है और कौन कानून का निर्माता"–वेडेल फिलिप्स

दैनिक
भारतीय बस्ती
बस्ती 20 फरवरी 2024 मंगलवार

सम्पादकीय

इसरो की नई छलांग

देशवासियों के लिये यह गर्व का विषय है कि इसरों नित नयी छलांग लगाकर विज्ञान के द्वारा जीवन को सहज बनाने के लिये अपने अभियान में जुटा है। अपने देश की कृषि व्यवस्था मौसम पर निर्भर है। इन्सैट–3डीएस अब मौसम की सटीक सूचना दे सकेगा। इससे किसानों को सर्वाधिक लाभ होगा वही आपदा की स्थिति में जन ध्न हानि को बचाने की दिशा में मदद मिलेगी इससे बड़े नुकसान से बचा जा सकेगा। अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में इसरो की पहल से मनोबल बढा है। उम्मीद की जानी चाहिये कि आने वाले दिनों में इसरो नये अध्याय को और मजबूती से जोड़ेगा।

मौसम विज्ञान के क्षेत्र में अपनी पकड़ मजबूत बनाने की दिशा में भारतीय अंतरिक्ष संस्थान इसरो ने नई कामयाबी हासिल की है। श्रीहरिकोटा से तीन चरण वाले जीएसएलवी ने उड़ान भरने के लगभग 18 मिनट बाद इन्सैट–3डीएस को जियोसिंक्रोनस ट्रांसफर ऑर्बिट (जीटीओ) में तैनात कर दिया। यह ऑर्बिट या कक्षा पृथ्वी से 35,786 किलोमीटर ऊपर स्थित है। इस ऊंचाई पर एक सैटेलाइट या उपग्रह उतने ही समय में एक कक्षा पूरी करता है, जितने समय में हमारा ग्रह अपनी धुरी पर एक चक्कर लगाता है, यह पृथ्वी के एक दिन के समान है। यह दूरसंचार और मौसम उपग्रहों के लिए एक लोकप्रिय कक्षा है, जहां से लगभग स्थिर भाव से उपग्रह अपने लक्ष्य पर निगाह बनाए रख सकता है। यह मौसम पूर्वानुमान और आपदा चेतावनी के लिए उन्नत मौसम संबंधी अवलोकन और भूमि व महासागरों की निगरानी के लिए डिजाइन किया गया है। मौसम विज्ञान एक ऐसा क्षेत्र है, जिसमें भारत को तेज तरक्की करने की जरूरत है, क्योंकि अपनी विविध भौगोलिक स्थिति की वजह से यह अनगिनत प्रकार की चुनौतियों से जूझ रहा है।

सैटेलाइट को कक्षा में स्थापित करने की जिम्मेदारी जिस विमानन वाहन पर थी, उसे नॉटी बॉय कहा जा रहा है। इसरो के एक दिग्गज वैज्ञानिक ने लॉन्चिंग की सफलता के बाद खुशी से कहा है कि शरारती लड़का अब आज्ञाकारी हो गया है। दरअसल, इस लॉन्चिंग रॉकेट को पुख्ता करने में बहुत समस्या आ रही थी। इसी वजह से इसे शरारती लड़का या नॉटी बॉय कहा गया। अगर भारतीय अंतरिक्ष वैज्ञानिकों ने इस शरारती लड़के को अनुशासित बना दिया है, तो यह अपने आप में बड़ी कामयाबी है। तरह–तरह के उपग्रह विकसित कर लेने से कहीं ज्यादा चुनौतीपूर्ण है, उपग्रहों को उचित कक्षाओं में स्थापित करने की क्षमता हासिल करना। वास्तव में, इस समग्र लॉन्चिंग वाहन से यह 16वां प्रक्षेपण था और इसका सफल होना बहुत जरूरी था। मौसम संबंधी उपग्रहों में लगातार विकास हो रहा है और नए–नए उपग्रहों को कक्षाओं में स्थापित करना जरूरी है, ताकि सही भविष्यवाणियों की स्थिति बनी रहे। इसरो के लिए यह बहुत अच्छा समय है। विगत महीनों में इसरो ने कुछ बड़ी सफलताएं हासिल की हैं। उदाहरण के लिए, अगस्त 2023 में देश अपने चंद्रयान–3 लैंडर–रोवर मिशन के साथ चंद्रमा–लैंडिंग क्लब में शामिल हो गया। इसके बाद भारत ने आदित्य–एल1 को भी लॉन्च किया है। इसी वर्ष 1 जनवरी को देश ने ब्लैक–होल का अध्ययन करने वाले एक्स–रे पोलारिमीटर उपग्रह को लॉन्च किया है।

कोई शक नहीं है कि भारतीय अंतरिक्ष विज्ञान ने एक लंबा सफर तय कर लिया है, दो साल बाद भारत के पहले उपग्रह आर्यभट्ट को पचास साल हो जाएंगे। 19 अप्रैल, 1975 को रूस ने भारत के आर्यभट्ट को कक्षा में स्थापित किया था। उसके बाद से भारत इस यात्रा में दुनिया के अनेक देशों से आगे निकल गया है। भारत अभी तक 130 से ज्यादा उपग्रह लॉन्च कर चुका है। वह दूसरे देशों की मदद में भी आगे है। मौसम विज्ञान की बात करें, तो साल 2002 में सफलता के साथ लॉन्च हुआ कल्पना–1 भारत का पहला मौसम संबंधी उपग्रह था। आज इसरो इस स्थिति में पहुंच गया है कि नासा आगे बढ़कर उसके साथ अभियान पर काम कर रहा है। संदेश स्पष्ट है कि भारतीय अंतरिक्ष विज्ञान का भविष्य उज्ज्वल है।

राजनीति में मर्यादा के प्रश्न और माननीय

–सुरेश सेठ–

भारतीय इस बात पर गर्वित होते हैं कि भारत में दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है। अभी हाल ही में 17वीं लोकसभा का सत्रावसान भी हो गया। इसके बाद देश में आम चुनाव होंगे और 18वीं लोकसभा अपना पदभार संभालेगी। बेशक पहली फरवरी को वित्तमंत्री निर्मला सीतारमण ने देश का अंतरिम बजट पेश कर दिया लेकिन वहीं चौंकाने वाली घोषणाओं से परहेज किया गया। अब देश के जनमानस को जुलाई मास का इंतजार शिद्दत से रहेगा कि नई सरकार नया बजट क्या पेश करती है और इसके द्वारा भारत की विकास यात्रा कितनी द्रुत गति से हो पाती है।

वही देशभर में चुनावी समर तो शुरू हो ही गया है। विपक्षी कांग्रेस द्वारा भारत जोड़ो न्याय यात्रा निकाली जा रही है। वहां मोदी जी विकसित भारत संकल्प यात्रा निकाल रहे हैं। वे अपने कार्यों व उपलब्धियों का लेखा–जोखा जनता के सामने रख रहे हैं। अभी संसद के बीते सत्र में मोदी सरकार के श्वेत पत्र को विपक्ष के स्याह पत्र के साथ पंजा लड़ाते हुए भी देखा गया। जहां राजग सरकार द्वारा प्रस्तुत श्वेत पत्र को यह कहा गया था कि पिछली कांग्रेस सरकार की आर्थिक नीतियों ने जहां देश की अर्थव्यवस्था को पंगु बना दिया था, साथ ही यह भी दावा किया गया कि देश में जो तरक्की हुई वह मोदी सरकार की दो पारियों में हुई। जबकि स्याह पत्र में विपक्षी यह कहते रहे कि जो बीत गया, उसके तुलनात्मक अध्ययन में अपने पूर्वाग्रही निष्कर्षों को छोड़कर अगर सरकार देश को दरपेश महंगाई, बेकारी और बेरोजगारी की समस्या से जूझने का पत्र पेश करती तो शायद यह अधिक समीचीन होता। विपक्ष वास्तविकता को सामने लाने की बात करता रहा है।

इस बात को छोड़कर अगर हम लोकसभा के इस सत्र का आकलन करें तो लोकसभा के स्पीकर ओम बिरला का कहना अतिशयोक्ति न माना जाएगा कि लोकसभा ने 97 फीसदी उत्पादकता के साथ काम किया है। लेकिन लोकसभा के लगभग सभी सत्र कोलाहल भरे और हंगामाखेज भी रहे। चिंतन, मनन और सार्थक विचारों का आदान–प्रदान तो नहीं हुआ लेकिन हर सत्र में सरकार ने अपनी बहुसंख्या के बल पर दरपेश विधेयक पास करवा लिए। संसद के आखिरी सत्र के आखिरी दिन मोदी जी ने बहुत कुछ साफ–साफ बातें कहीं। लोकसभा के कुल कामकाज को देखते हैं तो 221 विधेयक इसमें पास हुए नजर आए हैं।

निस्संदेह, ये लोकसभा नौजवान और शिक्षित लोकसभा थी। इसकी औसत आयु 54 वर्ष थी और इसके 400 सदस्य स्नातक थे। 207 सदस्य पहली बार चुनकर आए। संसद को नया संसद भवन मिला और मिलते ही संसद की सुरक्षा में चूक हो गई। आतंकी हमले की बरसी वाले दिन ही दो लोग लोकसभा में घुस आए। इस पर खूब हंगामा हुआ। वहीं 100 से ज्यादा सांसदों का निलंबन एक ऐतिहासिक घटना थी।

अब 18वीं लोकसभा गठित होगी। भारतीय लोकतंत्र के लिये शुभ इसी में है कि इसके माहौल, कामकाज और चुनकर आने वाले सदस्यों के दायित्व में बदलाव देखा जाए। अभी तक परंपरा रही है कि संसद का सत्र शुरू होने से पहले सभी पार्टियों की बैठक होती थी, जिसमें यह फैसला किया जाता कि फालतू का कोलाहल नहीं होगा। गंभीर विचार–विमर्श होगा और देश को विकास मार्ग पर चलने के लिए सही दिशा पकड़ने का सुमीता भी लोकसभा का सत्र देगा। लेकिन किसी भी सत्र में ऐसा न हो सका। कभी अडानी पर जांच की बात, कभी चीनी घुसपैठ का इंझंट और कभी जातीय जनगणना को लेकर उठापटक होती रही। राम की महिमा के बारे में जो आखिरी दिन संसद के सत्र का विस्तार हुआ, वहां भी राजनीतिक उठापटक नजर आई।

आजकल संसद की कार्यवाही का लाइव प्रसारण होता है। सांसदों का यह व्यवहार और लोकसभा या राज्यसभा के स्पीकर द्वारा डांट–फटकार आम जनता को बहुत शोभनीय नहीं लगती। आखिरी दिन भी राज्यसभा के सभापति जगदीप ध नखड़ को भारत रत्न की घोषणाओं पर विपक्षी दलों की चीखो–पुकार के बारे में सख्त रुख अपनाना पड़ा।

इसीलिए अब जब अगले आम चुनावों के बाद 18वीं लोकसभा का गठन होगा तो कुछ बातों के बारे में सत्तापक्षी और विपक्षी सांसदों को सचेत होना पड़ेगा। पहली बात तो यह है कि देश के सामने खड़ी गंभीर समस्याओं पर गंभीर चर्चा कब होगी? नारेबाजी, विरोध, आंकड़ेबाजी और उनके मिथ्या होने के आरोप संसद की गरिमा को नहीं बढ़ाएंगे। राष्ट्रहित ही सर्वोपरि होना चाहिए। सांसद अपने–अपने दायित्व का निर्वाह करते हुए जनसमस्याओं पर चर्चा करेंगे। इसके अतिरिक्त आने वाले वर्षों के लिए भी मोदी जी ने नये सुधारों का संकल्प लिया। लोकसभा और राज्यसभा के सांसदों के व्यवहार में भी सुधार होने चाहिए। देश महत्वपूर्ण है व्यक्ति नहीं। जितनी जल्दी यह स्वीकार कर लिया जाए, उतना ही भारतीय संसद का माहौल लोकतंत्र के गौरव के अनुरूप हो जाएगा। यह लोकतंत्र के लिये शुभ होगा।

लोकतंत्र में जनता को है 'जानने का अधिकार'

–विनीत नारायण–

जिन–जिन औद्योगिक घरानों ने सत्तापक्ष के अलावा विपक्षी दलों को भी चुनावी चंदा दिया है, उन्होंने यही उम्मीद की थी कि उनका नाम गुप्त रखा जाएगा। परंतु शीर्ष अदालत के इस फैसले के बाद अब यह भी सार्वजनिक हो जाएगा। इसलिए अब इन घरानों को इस बात का डर है कि कहीं उन पर विभिन्न जांच एजेंसियों द्वारा कोई कार्रवाई तो नहीं की जाएगी। परंतु यहां एक तर्क यह भी है कि जिन–जिन औद्योगिक घरानों को किसी भी राजनीतिक दल को सहयोग करना है तो उन्हें डरना नहीं चाहिए। यदि वे किसी भी दल की विचारधारा के समर्थक हैं तो उन्हें उस दल को खुल कर सहयोग देना चाहिए।

किसी भी स्वस्थ लोकतंत्र में मतदाता और नेता के बीच यदि विश्वास ही न हो तो वो रिश्ता ज्यादा लम्बा नहीं चलता। लोकतंत्र में हर एक चुना हुआ जनप्रतिनिधि अपने मतदाता के प्रति जवाबदेही के लिए बाध्य होता है। यदि मतदाता को लगे कि उससे कुछ छुपाया जा रहा है तो वो ठगा–सा महसूस करता है। लोकतंत्र या जनतंत्र का सीधा मतलब ही यह होता है कि जनता की मर्जी से चुने गए सांसद या विधायक उनकी आवाज उठाएंगे और उनके ही हक में सरकार चलाएंगे। यदि मतदाताओं को ही अंधेरे में रखा जाएगा तो दल चाहे कोई भी हो दोबारा सत्ता में नहीं आ सकता। परंतु पिछले सप्ताह देश की शीर्ष अदालत ने एक ऐसा फैसला सुनाया जिसने देश के करोड़ों मतदाताओं के बीच उम्मीद की किरण जगा दी।

'इलैक्टोरल बांड्स' के जरिए राजनीतिक दलों को दिए जाने वाले चुनावी चंदे को लेकर देश भर में एक भ्रम सा फैला हुआ था। जिस तरह इन बांड्स के जरिए दिए जाने वाले चुनावी चंदे की जानकारी सार्वजनिक नहीं की जा रही थी उसे लेकर भी जनता के मन में काफी संदेह था। जिस तरह से विपक्षी नेता सत्तापक्ष पर आरोप लगा रहे थे कि कुछ औद्योगिक घराने सत्तारूढ़ दल को भारी मात्रा में 'चुनावी चंदा' दे रहे थे वो असल में चुनावी चंदा नहीं बल्कि सरकार द्वारा अपने हक में नीतियां बनवाने की रिश्वत है।

विपक्ष का ऐसा कहना इसलिए सही नहीं है क्योंकि कोई भी दल सत्ता में क्यों न हो बड़े औद्योगिक घराने हमेशा से यही करते आए हैं कि वे सरकार से अच्छे संबंध बना कर रखते हैं। वो अलग बात है कि इन बड़े घरानों द्वारा दिए गए राजनीतिक चंदे की पोल कभी न कभी खुल ही जाती थी। परंतु देश की सर्वोच्च अदालत ने 'इलैक्टोरल बांड्स' की जानकारी को सांझा न करने के निर्णय को गलत ठहराया और 'इलैक्टोरल बांड्स' को रद्द कर दिया। इतना ही नहीं आने वाले तीन हफ्तों में चुनाव आयोग को यह निर्देश भी दे डाले कि 'इलैक्टोरल बांड्स' द्वारा दिए गए चंदे की पूरी जानकारी को सार्वजनिक किया जाए।

विपक्षी दलों, वकीलों, बुद्धिजीवियों और राजनीतिक पंडितों द्वारा इस फैसले का भरपूर स्वागत किया जा रहा है। यहां हम किसी भी एक विशेष राजनीतिक दल की बात नहीं करेंगे। बड़े औद्योगिक घराने हर उस दल को वित्तीय सहयोग देते आए हैं जो कि सरकार बनाने के काबिल होता है। परंतु सुप्रीम कोर्ट में दायर याचिका के अनुसार यदि यह चुनावी चंदा था तो क्या सभी पाघ्टयों ने इसे चुनाव के लिए ही इस्तेमाल किया? क्या चुनाव आयोग के तय नियमों के अनुसार बड़े राजनीतिक दलों के प्रत्याशी लोकसभा चुनाव में 95 लाख से अधिक राशि खर्च नहीं करते? क्या 'इलैक्टोरल बांड्स' को जारी करते समय काले धन की रोकथाम के किए गए दावे के अनुसार चुनावों में नकद राशि खर्च नहीं हुई? अब जब सुप्रीमकोर्ट का आदेश हुआ है तो वो सभी राजनीतिक दल जिन्हें 'इलैक्टोरल बांड्स' के जरिए सहयोग राशि मिली थी, उन्हें इसकी आमदनी और खर्च का हिसाब भी सार्वजनिक करना पड़ेगा।

वहीं दूसरी ओर जिन–जिन औद्योगिक घरानों ने सत्तापक्ष के अलावा विपक्षी दलों को भी चुनावी चंदा दिया है, उन्होंने यही उम्मीद की थी कि उनका नाम गुप्त रखा जाएगा। परंतु शीर्ष अदालत के इस फैसले के बाद अब यह भी सार्वजनिक हो जाएगा। इसलिए अब इन घरानों को इस बात का डर है कि कहीं उन पर विभिन्न जांच एजेंसियों द्वारा कोई कार्रवाई तो नहीं की जाएगी। परंतु यहां एक तर्क यह भी है कि जिन–जिन औद्योगिक घरानों को किसी भी राजनीतिक दल को सहयोग करना है तो उन्हें डरना नहीं चाहिए। यदि वे किसी भी दल की विचारधारा के समर्थक हैं तो उन्हें उस दल को खुल कर सहयोग देना चाहिए।

परंतु जो बड़े औद्योगिक समूह हैं वे यदि विपक्षी पाघ्टयों को कुछ वित्तीय सहयोग देते हैं, उससे कहीं अधिक मात्रा में यह सहयोग राशि सत्तारूढ़ दल को भी देते हैं। इसलिए यह कहना गलत नहीं होगा कि 'इलैक्टोरल बांड्स' द्वारा दी गई सहयोग राशि इन घरानों और राजनीतिक दलों के बीच एक संबंध बनाना है। जो भी हो शीर्ष अदालत ने यह बात तो स्पष्ट कर दी है कि लोकतंत्र में पारदर्शिता होना कितना अनिवार्य है। इस फैसले पर टिप्पणी करते हुए सुप्रीम कोर्ट के वरिष्ठ वकील कपिल सिब्बल के अनुसार, "अब चूंकि चुनाव आयोग को 'इलैक्टोरल बांड्स' का सारा विवरण सार्वजनिक करना है, तो इससे यह बात भी सार्वजनिक हो जाएगी कि किस राजनीतिक दल को किस बड़े औद्योगिक घराने से भारी रकम मिली है।

इसके साथ ही यह बात पता लगाने में देर नहीं लगेगी कि इस बड़ी सहयोग राशि के बदले उस औद्योगिक समूह को केंद्र या राज्य सरकार द्वारा क्या लाभ पहुंचाया गया है। ऐसा हो ही नहीं सकता कि कोई बड़ा उद्योगपति किसी दल को बड़ी मात्रा में दान दे और फिर केंद्र या राज्य सरकार का मंत्री उसका फोन न उठाए। दान के बदले काम को सरल भाषा में भ्रष्टाचार भी कहा जा सकता है।" चुनावी प्रक्रिया को पारदर्शी बनाने की ओर से 'इलैक्टोरल बांड्स' का समर्थन करते हुए सिब्बल का एक सुझाव है कि, "क्यों न औद्योगिक घरानों द्वारा दी गई सहयोग राशि को चुनाव आयोग में जमा कराया जाए और आयोग उस राशि को हर दल की संसद या विधान सभा में भागीदारी के अनुपात में बांट दे। ऐसा करने से किसी एक दल को 'इलैक्टोरल बांड्स' का बड़ा हिस्सा नहीं मिल पाएगा।" कुल मिलाकर 'इलैक्टोरल बांड्स' पर सुप्रीमकोर्ट के आदेश को एक अच्छी पहल माना जा रहा है। इस आदेश से चुनावों में मिलने वाली सहयोग राशि पर पारदर्शिता दिखाई देगी। नागरिकों के लिए सूचना के अधिकार के तहत चुनावी दान से संबंधित सभी जानकारी को सार्वजनिक किया जाएगा। 2024 के चुनावों से ठीक पहले ऐसे फैसले से उम्मीद की जा सकती है कि इन जानकारियों के सार्वजनिक होने पर मतदाता को सही दल के प्रत्याशी को चुनने में मदद मिलेगी। यह फैसला देर से ही आया परंतु दुरुस्त आया और लोकतंत्र को जीवंत रखने में काफी मददगार साबित होगा।

अमेरिका में भारतीयों पर बढ़ते हमले

–राकेश सैन–

भोगवादी संस्कृति में पले अमेरिकी युवाओं को परिश्रमी व मेधावी भारतीयों की सफलता हजम नहीं हो रही। आज भारतीय अमेरिकी अर्थव्यवस्था में अहम योदान दे रहे हैं। दरअसल, अमेरिका में बेरोजगारी काफी है और स्थानीय छात्र भारतीयों का मुकाबला नहीं कर पा रहे और वे स्पर्धा की बजाय हिंसाचार से खुन्नस निकालने का प्रयास करते हैं। वे स्वयं को यहां का मूलनिवासी बता कर अपनी दुर्दशा के लिए मेधावी भारतीयों को जिम्मेवार मानते हैं। रोजगार के अवसरों की कमी के चलते उत्पन्न असन्तोष के कारण बड़ी संख्या में अमेरिकी नशे और अपराध की दुनिया में उतर रहे हैं। यह दुखद ही है कि पिछले एक साल में अमेरिका में रह रहे पांच सौ बीस भारतीय मूल के लोगों के साथ नस्लीय हिंसा की घटनाएं हुई हैं जो विगत साल के मुकाबले में चालीस प्रतिशत अधिक है।

अतीत में जाएं तो पता चलेगा कि भारतीयों का अमेरिकी प्रवास काफी पुराना है। साल 1900 तक संयुक्त राज्य अमेरिका में दो हजार से अधिक भारतीय थे, मुख्यतः कैलिफोर्निया में। आज, भारतीय अमेरिकी संयुक्त राज्य अमेरिका में दूसरा सबसे बड़ा अप्रवासी समूह हैं।

मौके बेमौके दुनिया को मानवाधिकार, धार्मिक स्वतंत्रता और समानता का पाठ पढ़ाने वाले अमेरिका की स्थिति श्अीरों को नसीहत खुद मीयां फजीहतश वाली बनी हुई है। कारण है कि वहां पर दूसरे देशों से आए नागरिकों पर नस्लीय हमले बढ़ते जा रहे हैं और इसकी बहुत बड़ी संख्या में शिकार भारतीय बन रहे हैं। अपनी मेधा–परिश्रम के बूते अमेरिका में विशिष्ट जगह बनाते भारतीय युवा उन नस्लीय अमेरिकी युवाओं की आंख की किरकिरी बने हुए हैं जिन्हें लगता है कि भारतीय उनकी जगह ले रहे हैं।

दरअसल, इस सोच को दक्षिणपन्थी पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने हवा दी। इसी साल फरवरी के पहले सप्ताह शिकागो में एक भारतीय युवा को अज्ञात हमलावरों ने निशाना बनाया। इससे पहले एमबीए की डिग्री लेने करने वाले विवेक सैनी की लिथोनिया में पीट–पीटकर हत्या कर दी गई। इण्डियाना में समीर कामत कुछ दिन पहले मृत पाए गए। एक अन्य छात्र नील आचार्य लापता हुए, बाद में उनकी मृत्यु हो गई। वहीं एक युवा अकुल धवन, जो इलिनोइस विश्वविद्यालय का छात्र था, जनवरी में मृत पाया गया। इसी तरह श्रेयस रेड्डी की मौत की खबर भी कुछ सप्ताह पूर्व आई। निश्चय ही ये घटनाएं अमेरिका जैसे उस देश के लिए शर्मनाक हैं जो अपने आप को दुनिया का आदर्श लोकतांत्रिक देश होने का दावा करता है। ये घटनाएं स्टेच्यू आफ लिबर्टी की साख पर भी सवाल उठाने का काम कर रही हैं।

भोगवादी संस्कृति में पले अमेरिकी युवाओं को परिश्रमी व मेधावी भारतीयों की सफलता हजम नहीं हो रही। आज भारतीय अमेरिकी अर्थव्यवस्था में अहम योदान दे रहे हैं। दरअसल, अमेरिका में बेरोजगारी काफी है और स्थानीय छात्र भारतीयों का मुकाबला नहीं कर पा रहे और वे स्पर्धा की बजाय हिंसाचार से खुन्नस निकालने का प्रयास करते हैं। वे स्वयं को यहां का मूलनिवासी बता कर अपनी दुर्दशा के लिए मेधावी भारतीयों को जिम्मेवार मानते हैं। रोजगार के अवसरों की कमी के चलते उत्पन्न असन्तोष के कारण बड़ी संख्या में अमेरिकी नशे और अपराध की दुनिया में उतर रहे हैं। यह दुखद ही है कि पिछले एक साल में अमेरिका में रह रहे पांच सौ बीस भारतीय मूल के लोगों के साथ नस्लीय हिंसा की घटनाएं हुई हैं जो विगत साल के मुकाबले में चालीस प्रतिशत अधिक है। हिंसा की चपेट में केवल छात्र ही नहीं बल्कि वहां नौकरी कर रहे और वहां बस चुके लोग भी शामिल हैं।

अतीत में जाएं तो पता चलगा कि भारतीयों का अमेरिकी प्रवास काफी पुराना है। साल 1900 तक संयुक्त राज्य अमेरिका में दो हजार से अधिक भारतीय थे, मुख्यतः कैलिफोर्निया में। आज, भारतीय अमेरिकी संयुक्त राज्य अमेरिका में दूसरा सबसे बड़ा अप्रवासी समूह हैं। जनगणना ब्यूरो द्वारा संचालित 2018 अमेरिकी सामुदायिक सर्वेक्षण के आंकड़ों के अनुसार संयुक्त राज्य अमेरिका में रहने वाले भारतीय मूल के 4.2 मिलियन लोग हैं। जैसे–जैसे भारतीय अमेरिकी समुदाय की प्रोफाइल बढ़ी है, वैसे ही इसका आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक प्रभाव भी बढ़ा है।

वहां की हर पार्टी की सरकारों में भारतीयों की संख्या काफी सराहनीय रही है। ट्वीटर (एक्स) के सीईओ पराग अग्रवाल रहे तो गूगल के सीईओ सुन्दर पिचाई हैं जिनकी वार्षिक आय 242 मिलियन डॉलर है। पिचाई 2015 में गूगल के सीईओ बने थे। आज गूगल क्रोम सबसे पॉपुलर इंटरनेट ब्राउजर है और इसका श्रेय पिचाई को ही जाता है। इसके साथ ही गूगल हर सर्च से करीब हर मिनट 2 करोड़ रुपये की कमाई करता है। सत्या नडेला वर्ष 2014 में माइक्रोसॉफ्ट के सीईओ बने थे। वर्तमान में कम्पनी का बाजार पूंजीकरण करीब 2.53 खरब डॉलर है। नडेला की आय 23 लाख डॉलर पहुँच गई। नडेला को ग्लोबल इंडियन बिजनेस आइकॉन का सम्मान भी मिल चुका है। भारतीय मूल के अरविन्द कृष्णा 2020 से अमेरिका की बड़ी कम्पनी इण्टरनेशनल बिजनेस मशींस के सीईओ हैं। इस कम्पनी की बाजार पूंजीकरण 8 लाख करोड़ रुपए से ऊपर है। भारतीय मूल के शान्तनु नारायण 2007 से एडॉब इंक के सीईओ हैं। इसके अलावा अमेरिका की प्रमुख फूड और बेवरेज कम्पनी पेप्सीको में इन्दिरा नूई लगभग 12 साल तक सीईओ बनी रहीं। नूई के 12 साल के कार्यकाल में पेप्सिको की आय में 80 प्रतिशत से अधिक वृद्धि हुई। वर्तमान में भारतीय मूल के जो लोग अमेरिकी टेक कम्पनियों को सम्भाल रहे हैं उनकी कुल बाजार सम्पदा लगभग 5 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर है। माइक्रोसॉफ्ट के 34 प्रतिशत कर्मी भारतीय मूल के लोग हैं।

अमेरिका के वैज्ञानिकों में भी 12 प्रतिशत भारतीय हैं और नासा के तो 36 प्रतिशत वैज्ञानिक भारतीय मूल के हैं। भारतीयों की भूमिका अमेरिका के विकास में गिनाने बैठें तो शायद ये चर्चा कभी खत्म न हो। ये भारतीय हैं जो अमेरिका को विकास की दौड़ में तेजी से आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं और अमेरिका भी इस बात को स्वीकार करता है। भारतीय किसी की कृपा या दया पर नहीं बल्कि अपनी योग्यता, परिश्रम व मेधा के बल पर मौजूदा मुकाम पर पहुंचे हैं। असल में पूर्व राष्ट्रपति ट्रम्प की संकीर्ण दक्षिणपन्थी सोच जो वहां के युवाओं में तेजी से फैल रही है और यह मानती है कि अमेरिका पर केवल वहां के निवासियों का ही अधिकार है। ऐसी सोच रखने वालों को एक बार अमेरिका के असली मूलनिवासियों के बारे भी सोचना चाहिए जो आज लुप्तप्रायरू प्रजाति में शामिल हो चुके हैं। अमेरिका में आज जो भी हैं वो सभी बाहर से आए लोग हैं और अपने परिश्रम से आगे बढ़े हैं। वहां के युवाओं को भारतीयों से ईर्ष्या करने की बजाय इनसे सीख व प्रेरणा लेनी चाहिए।

सात साल में विकास के नए आयाम, महराजगंज जिले में 32 सौ करोड़ का निवेश –पंकज

संवाददाता–महराजगंज। कलेक्ट्रेट सभागार सहित सभी विधानसभा क्षेत्रों में सोमवार को ग्राउंड ब्रेकिंग सेरेमनी का आयोजन किया गया। कलेक्ट्रेट में आयोजित ग्राउंड ब्रेकिंग सेरेमनी को बतौर मुख्य अतिथि संबोधित करते हुए केंद्रीय वित्त राज्यमंत्री पंकज चौधरी ने कहा कि उत्तर प्रदेश ने पिछले सात वर्षों में विकास के नए आयाम तय किए हैं। 10 लाख करोड़ का निवेश मिला है। जनपद महराजगंज को भी 2300 करोड़ रुपये का निवेश प्रस्ताव प्राप्त हुआ। इनमें 112 निवेशकों के लगभग 700 करोड़ रुपये के निवेश का शिलान्यास सोमवार को किया गया।

केन्द्रीय वित्त राज्यमंत्री ने कहा कि पहले भी यही उत्तर प्रदेश और भारत था, किंतु स्थिति बिल्कुल विपरीत थी। देश और प्रदेश को विकास के पथ पर आगे ले जाने के लिए आवश्यकता थी और उद्यमियों के भीतर विश्वास पैदा करने की। प्रधानमंत्री ने निवेश के लिए व्यापारिक वातावरण में विश्वास पैदा किया। टेलीफोन बैंकिंग को रोकने के साथ–साथ आईबीसी कोड के माध्यम से एनपीए पर अंकुश लगाया गया। कोविड काल के वैश्विक आपदा के बावजूद कोई भी बैंक भारत में डूबने नहीं पाया और भारत के सभी बैंक फायदे में है। कहा कि व्यापारियों की समस्याओं को दूर करने के लिए विभिन्न संशोधनों को भी लागू किया। व्यापारिक गतिविधियों को गति देने के लिए युद्धस्तर पर इंफ्रास्ट्रक्चर बनाने के काम किया। प्रधानमंत्री ने हाल ही में एक करोड़ रूफटॉप सोलर सेल लगाने का लक्ष्य निर्धारित करते हुए भारत की भावी ऊर्जा आवश्यकताओं को अभी से पूरा करने की ओर कदम बढ़ा दिया है। आधुनिक कृषि और उद्योग दोनों को आगे बढ़ाने का कार्य किया। इससे जनपद महाराजगंज भी विकास के नए आयाम को प्राप्त करेगा। इस दिशा में महाराजगंज–आनंदनगर रेल लाइन की शुरुआत बहुत बड़ी उपलब्धि है। सदर विधायक जयमंगल कन्नौजिया ने कहा कि पहले उत्तर प्रदेश में अराजकता और गुंडा टैक्स से व्यापारी परेशान थे। लेकिन 2014 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और 2017 में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में गुंडे उत्तर प्रदेश से बाहर हो चुके हैं। प्रदेश में 10 लाख करोड़ और जनपद में 2300 करोड़ का निवेश बहुत बड़ी सफलता है। सीडीओ संतोष कुमार राय ने भी कार्यक्रम को संबोधित किया। इस मौके पर सभी लोगों ने इंदिरा गांधी प्रतिष्ठान लखनऊ से प्रधानमंत्री के मुख्य कार्यक्रम का सीधा प्रसारण देखा। उनका उद्बोधन सुना।

जनपद के प्रमुख निवेशकों को केंद्रीय वित्त राज्यमंत्री पंकज चौधरी ने प्रशस्ति पत्र प्रदान किया। इनमें बृजेश कुमार जायसवाल, पवन कुमार जायसवाल, शांति फाउंडेशन की ओर से डॉ. रफीक, राकेश कुमार गुप्ता, ओमप्रकाश गुप्ता, बृजेंद्र सिंह, फूलचंद अग्रवाल सहित विभिन्न उद्यमी शामिल रहे।

ग्राउण्ड ब्रेकिंग सेरमनी 4.0 के अन्तर्गत महराजगंज जिले में 300 करोड़ की लागत का एक मेडिकल कालेज/अस्पताल पूर्ण हो चुका है। 187 करोड़ की लागत से राइस मिल की 56 इकाईयां, होटल एंव रिजॉर्ट की 12 इकाईयां (कुल लागत 90.8 करोड़) जनपद में प्रारंभ हो चुकी हैं। शिक्षा क्षेत्र में 9 कालेज कुल 29 करोड़, खाद्य प्रसंस्करण उद्योग में 12 इकाईयां कुल 38.4 करोड़, वेयर हाउस / गोदाम की 5 इकाईयाँ कुल 23.9 करोड़, मेडिकल उपकरण बनाने वाली 3 इकाईयां 6.55 करोड़, मुर्गीपालन/फार्मिंग की 7 इकाईयों कुल 07 करोड़ तथा अन्य विविध उद्योग की 7 इकाईयों कुल 17.8 करोड़ की परियोजनाएँ प्रारम्भ हो चुकी हैं। ग्राउंड ब्रेकिंग सेरेमनी कार्यक्रम में जिला पंचायत अध्यक्ष रविकांत पटेल, मिठौरा ब्लॉक प्रमुख, एडीएम डॉ. पंकज कुमार वर्मा, उपायुक्त उद्योग अभिषेक प्रियदर्शी सहित संबंधित अधिकारी और उद्यमी उपस्थित रहे।

संतों की मणिमाला के अमूल्य रत्न थे महंत विष्णुदेव महाराज

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

अयोध्या। संतों की तपोस्थली अयोध्या में सैकड़ो भजनानंदी संत हुए हैं उसमें अभिराम दास वार्ड कटरा मोहल्ले में स्थित परमहंस आश्रम के तपस्वी संत महंत विष्णुदेव महाराज भी सम्मिलित है। श्री महाराज अयोध्या के उन संतों में से एक हैं जो निरंतर सेवा में लगे रहते हैं भजन साधना के साथ–साथ सेवा को ही अपनी दिनचर्या बना लिए और निरंतर भजन में लीन रहते थे।7 फरवरी को श्री महाराज जी का साकेत पास हो गया और अयोध्या के भजनानंदी संतों की मणिमाला में से एक विभूति काम हो गई। श्री महाराज जी के आश्रम में सोमवार को अयोध्या के संतों महंतों ने उनके शिष्य महंत गोविंद दास महाराज के संयोजन में आयोजित श्रद्धांजलि सभा में सम्मिलित हुई और श्री महाराज जी को पुष्पांजलि अर्पित की। महंत गोविंद दास महाराज ने बताया कि गुरुदेव भगवान निरंतर भजन करते हुए लगभग शतायु का जीवन प्राप्त किया और उनका आशीर्वाद इस दास के ऊपर निरंतर बना रहा और आज मैं जो भी कुछ हूं उन्हीं के आशीर्वाद से हूं और आश्रम में उनके आशीर्वाद से ही निरंतर सभी प्रकार की सेवाएं चलती रहेगी। आश्रम में पहुंचे अयोध्या के संतों ने कहा कि अयोध्या में वर्तमान समय में महंत विष्णु देव महाराज संतों की अमूल्य निधि थे जिनके साकेत वास के बाद वह स्थान रिक्त हो गया है जिसकी पूर्ति होना अब संभव नहीं। श्री महाराज जी संतों की सेवा के साथ–साथ गौ सेवा विद्यार्थी सेवा आश्रम में निरंतर करते रहते थे आश्रम में आने वाला कोई भी व्यक्ति जो आश्रम से जुड़ा था या नहीं निराश नहीं लौटा और उनके शिष्य गोविंद दास महाराज का स्वभाव श्री महाराज जी जैसा है और वह उन्हीं के नक्शे कदम पर आगे चल रहे हैं।अंत में पीठ के वर्तमान महंत ने आए हुए संत–महंतों को अंगवस्त्र भेंटकर स्वागत–सत्कार किया। इस मौके पर नाका हनुमानगढ़ी के महंत रामदास, मानस भवन महंत अर्जुन दास, डाड़िया महंत महंत गिरीश दास, श्रीरामप्रिया कुंज महंत महंत उद्धव शरण, श्रीरामकुंज मंदिर के पीठाधिपति महंत गणेशानंद दास, सरयूकुंज पीठाधीश्वर महंत राममिलन शरण, श्रीरामाश्रम पीठाधीश्वर महंत जयराम दास वेदांती, हनुमत सदन महंत अवधकिशोर शरण, सीताराम निवास के आचार्य सत्येंद्र दास वेदांती, श्रीरामचरित मानस विद्यापीठ महंत कमलादास रामायणी, अयोध्यानाथ मंदिर महंत भरत प्रपन्नाचार्य, महंत रामलोचन शरण, स्वामी गयाशरण, प्रियेश दास, संतदास, सूरज दास, आदि संत–महंत, भक्तगण मौजूद रहे।

राष्ट्रीय एकांकी में चमके गिरहिया के बच्चे, प्रदेश में मिला दूसरा स्थान

संवाददाता–महराजगंज। भारतीय खेल प्राधिकरण (साई) सरोजनीनगर लखनऊ में आयोजित राज्य स्तरीय बेसिक बाल क्रीड़ा प्रतियोगिता में निचलौल क्षेत्र के कंपोजिट विद्यालय बंजारी पट्टी गिरहिया के बच्चों ने राष्ट्रीय एकांकी में गोरखपुर मंडल को द्वितीय स्थान दिलाया। लखनऊ मंडल को प्रथम स्थान मिला। हाकी व कुश्ती में जिले के परिषदीय विद्यालय के बच्चे सेमीफाइनल तक पहुंचे थे। लेकिन कड़े मुकाबले में शिकस्त हुए। बेसिक बाल क्रीड़ा प्रतियोगिता के मंडल स्तर पर जिले के परिषदीय विद्यालय के 91 खिलाड़ी राज्य स्तरीय प्रतियोगिता के लिए क्वालीफाई किए थे। लखनऊ में 15 से 17 फरवरी तक आयोजित राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में प्रतिभाग कराने के लिए मंडल स्तर पर चयनित खिलाड़ियों को बेसिक शिक्षा विभाग ने चुप्पी साध लिया था। शिक्षकों ने अपने खर्चे से 42 बच्चों को लखनऊ ले गए। इसमें से हाकी टीम में मिठौरा क्षेत्र के यूपीएस मुंडेरा कला के 12 बच्चे,पीटी के 17 बच्चे, राष्ट्रीय एकांकी में गिरहिया के 8 बच्चे, जूडो के दो बच्चे व कुश्ती में पनियरा क्षेत्र के कंपोजिट विद्यालय नरकटहा की छात्रा मंजू शामिल थी। मंडल में क्वालीफाई 49 परिषदीय बच्चे राज्य स्तरीय बेसिक बाल क्रीड़ा प्रतियोगिता में जा ही नहीं पाए। निचलौल क्षेत्र के कंपोजिट विद्यालय बंजारी पट्टी गिरहिया के प्रधानाध्यापक धन्नू चौहान व भूपेन्द्र कुमार सिंह व कोचशिक्षक अरविन्द विश्वकर्मा की देखरेख में कक्षा छह का राहुल, कक्षा सात का चंदन व कक्षा आठ के छात्र कृष्णा, नितीश, विजय, अंकित, आकाश व आलोक ने राज्य स्तरीय एकांकी प्रतियोगिता में हिस्सा लिया। गोरखपुर मंडल को इन बच्चों को बदौलत राष्ट्रीय एकांकी में दूसरा स्थान मिला। लखनऊ मंडल को प्रथम स्थान मिला। इस मौके पर जिला व्यायाम शिक्षक अनिरुद्ध निराला, विवेक कुशवाहा, विवेक सिंह यादव, अनंत यादव, धन्नू सिंह चौहान, भूपेन्द्र सिंह, अरविन्द विश्वकर्मा आदि जिले के शिक्षक मौजूद रहे। मिठौरा क्षेत्र के शिक्षक विवेक सिंह कुशवाहा अपनी व्यवस्था से यूपीएस मुंडेरा कला के 12 बच्चों की हाकी टीम को लेकर लखनऊ पहुंचे थे। सेमीफाइनल में अंक बराबर होने से पेनाल्टी शूटआउट से नतीजा घोषित किया गया। इसमें यूपीएस मुंडेरा कला के खिलाड़ी चार गोल दाग सके। विन्ध्यांचल मंडल के खिलाड़ी पांच गोल से बच्चे विजेता बने। राज्य स्तरीय बेसिक बाल क्रीड़ा प्रतियोगिता के कुश्ती में पनियरा क्षेत्र के कंपोजिट विद्यालय नरकटहा की छात्रा मंजू क्वार्टर फाइनल में आजमगढ़ मंडल की प्रतिद्वंदी खिलाड़ी को पटखनी देकर सेमीफाइनल में पहुंची। पर, सेमीफाइनल में अयोध्या मंडल की छात्रा से कुश्ती मुकाबला रोचक मुकाबले में हार गई। मंडल स्तरीय बेसिक बाल क्रीड़ा प्रतियोगिता में मंडल स्तर पर चयनित होने के बाद भी बेसिक शिक्षा विभाग की लापरवाही के चलते फरेंदा क्षेत्र के लेजार महदेवा की खो–खो टीम, निचलौल क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालय धमऊर की बालक बालिका कबड्डी की टीम, परतावल क्षेत्र के यूपीएस धनगढ़ा की जूनियर संवर्ग की कबड्डी टीम के अलावा एथलेटिक्स के कई खिलाड़ी मंडल स्तर पर जीत के बाद भी राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में नहीं जा पाए। कबड्डी की टीम लखनऊ जाने के लिए स्पोर्ट्स स्टेडियम महराजगंज आ चुकी थी, लेकिन यहां से लखनऊ ले जाने के लिए कोई इंतजाम नहीं देख खिलाड़ी मायूस होकर घर लौट गए। अब बीईओ के माध्यम से शिक्षकों पर यह दबाव बनाया जा रहा है कि वह बच्चों से यह लिखवा कर प्रमाण पत्र दे दें कि अभिभावक बच्चों को लखनऊ भेजने को तैयार नहीं थे।

कांग्रेस के बैंक खातों को फ्रीज करने पर भड़के कांग्रेसी, पीएम मोदी के खिलाफ किया प्रदर्शन

संवाददाता–गोण्डा। यूपी कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष अजय राय के निर्देश पर गोंडा जिले में कांग्रेस के जिलाध्यक्ष प्रमोद मिश्रा की अगुवाई में आयकर आयुक्त के कार्यालय पर जुटे कांग्रेसियों ने जोरदार प्रदर्शन किया। कांग्रेस कार्यकर्ताओं का कहना है कि बिना किसी वैध कारण के भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के खातों को फ्रीज कर दिया गया। सोमवार को दोपहर 12बजे जिले के कांग्रेस कार्यकर्ता आयकर आयुक्त कार्यालय पर उपस्थित हुए। जो एक स्वर में मोदी तेरी तानाशाही नहीं चलेगी। सीबीआई, ईडी आयकर की तानाशाही नहीं चलेगी के नारे के लगाकर प्रदर्शन कर रहे थे। जिलाध्यक्ष प्रमोद मिश्रा ने कहा कि सरकारी मशीनरी का मनमानी ढंग से उपयोग किया जा रहा है। लोकसभा चुनाव के ठीक पहले प्रमुख विपक्षी दल के कामों में बाधा डालना इस मदमस्त सरकार के प्रतिशोध की भावना को प्रदर्शित करता है। हम कांग्रेस जन ना तो डरेंगे और ना ही झुकेंगे। उन्होंने कहा कि सरकार के अलोकतांत्रिक रवैया के खिलाफ सड़क से लेकर संसद तक अपना संघर्ष जारी रखेंगे। प्रदर्शन करने वालों में प्रमुख रूप से प्रवक्ता शिव कुमार दुबे अल्पसंख्यक कांग्रेस जिलाध्यक्ष समीर खान जिलापाध्यक्ष विनय प्रकाश त्रिपाठी, महासचिव अरविंद शुक्ला, अविनाश मिश्रा, जितेन्द्र तिवारी चांद खान, सभासद शाहिद अली कुरेशी सचिव शिवेंद्र शर्मा विजय सोनी ब्लॉक अध्यक्ष हरिश्चंद्र श्रीवास्तव, अवधेश तिवारी, अब्दुल सलीम, आवेश अहमद, अय्यूब खान, हरीराम वर्मा, राजू सेवादल, सहित तमाम कांग्रेस जन शामिल रहे।

बजाज आलियांज ने उन्नत बीमा सेवाओं के लिए अयोध्या में खोला कार्यालय

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

अयोध्या। भगवान श्री राम की नगरी अयोध्या के हर नागरिक को सुरक्षित करना हमारा लक्ष्य है इसलिए हम अयोध्या के प्रत्येक ग्राम पंचायत तक पहुंच कर प्रत्येक नागरिकों की सुरक्षा सुनिश्चित करेंगे उक्त बातें प्रेस से मुखातिब होते हुए बजाज एलियांज जनरल इंश्योरेंस के एमडी सीईओ तपन सिंघल ने कही। उन्होंने बताया कि भारत की अग्रणी प्राइवेट जनरल इंश्योरेंस कंपनियों में से एक, बजाज आलियांज जनरल इंश्योरेंस ने आज उत्तर प्रदेश के अयोध्या में अपना नया कार्यालय खोला। उत्तर प्रदेश राज्य के अग्रणी बीमाकर्ता के लिए अयोध्या में ऑफिस खोला जाना कंपनी के रणनीतिक विस्तार और राज्य में बीमा अंतर को पाटने तथा साथ ही साथ इसके आर्थिक विकास को और मजबूत करने की कंपनी की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।विश्व पटल पर छाये धार्मिक शहर अयोध्या अब समग्र भारतीय अर्थव्यवस्था में अभिन्न भूमिका निभाने जा रहा है। ऐसे में अब बजाज आलियांज का लक्ष्य अपने नागरिकों को वित्तीय सुरक्षा प्रदान करके अयोध्या के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाना है। भव्य राम मंदिर के उद्घाटन के बाद अयोध्या में रोजाना लाखों भक्त और पर्यटक आ रहे हैं और इस सूरत में अयोध्या एक प्रमुख केंद्र के रूप में उभर चुका है। इन परिस्थितियों ने अयोध्या और आसपास के इलाकों में हॉस्पिटैलिटी, पर्यटन, स्वास्थ्य सेवा, बैंकिंग और इंफ्रास्ट्रक्चर जैसे विभिन्न क्षेत्रों में व्यक्तियों, परिवारों और व्यवसायों के लिए बीमा सल्यूशन की डिमांड जनरेट करेगा और ऐसे में बजाज आलियांज अपने विभिन्न प्रोडक्ट पोर्टफोलियो के जरिये इन उभरती जरूरतों को पूरा कर अयोध्या के चहुंमुखी आर्थिक विकास में योगदान देने वाला है। इस अवसर पर विक्रमजीत सिंह रोहित जैन सहित अन्य लोग उपस्थित है।

महज 45 दिन में कैसे पूरे होंगे पालिका के 42 काम

संवाददाता–गोण्डा। करीब दस महीनों के बाद पालिका गोण्डा को विकास कार्यों को कराने की नौबत आई तो अजब स्थितियां बनी हुई है। काम तो 42 हैं लेकिन उन्हें 45 दिनों में पूरा करना है। फर्मों को जारी कार्यादेश में इसका जिक्र साफ तौर से कर दिया गया है। इससे पालिका को अब हर दिन एक काम को पूरा कर देने की चुनौती होगी। पालिका में निर्माण कार्य का पटल देख रहे वरिष्ठ कर्मी गिरधार श्रीवास्तव बताते हैं कि फर्मों को कार्यादेश बीते शनिवार को जारी कर दिया गया है, इन सभी कार्यों को कराने में करीब दो दर्जन फर्में शामिल हैं। करीब तीन करोड़ की लागत से 27 वार्डों में विकास कार्यों को कराया जाना है। वहीं नगर पालिका के ईओ संजय कुमार मिश्रा ने बताया कि सभी फर्मों को विकास कार्यों को इसी वित्तीय वर्ष में कराकर पूरा कर देने के निर्देश दिए गए हैं। बताया जा रहा है कि इसके बाद यह पैसा ब्लाक कर दिया जाएगा और फिर नए वित्तीय सत्र में वापस लाने में उतनी प्रक्रियाओं की मशक्कत करनी होगी। बता दें कि पालिका गोण्डा में सभी वार्डों में नाली और सड़क निर्माण आदि कार्यों के लिए 42 कार्यों की निविदा कराई गई। हालांकि नगर पालिका में सभासदों का एक गुट इस निविदा में बस्ती जा रही शिथिलता को लेकर सवाल उठा रहा है। आवास विकास कालोनी के सभासद अनूप श्रीवास्तव, डब्बू कहते हैं कि निविदा को खोलने में पहले ही हफ्ते भर की देरी कर दी गई। 27 जनवरी को तिथि प्रकाशन के बावजूद तीन फरवरी को खोला गया। अब फर्मों को कार्यादेश बनाने में लेटलतीफी की जा रही है।

इंटरमीडिएट के 11 विद्यार्थियों ने छोड़ी सीबीएसई हिन्दी की परीक्षा

संवाददाता–महराजगंज। सीबीएसई बोर्ड की इंटरमीडिएट हिन्दी कोर की परीक्षा सोमवार को चार परीक्षा केंद्रों पर हुई। इसमें कुल 686 परीक्षार्थी पंजीकृत रहे। जिसमें 675 ने परीक्षा दी। जबकि 11 ने परीक्षा छोड़ दी। पहले दिन की परीक्षा में शांतिपूर्ण ढंग से पूरा हुआ। अधिकांश परीक्षार्थियों में उत्साह देखा गया। परीक्षा केंद्र विशप एकेडमी महराजगंज पर कुल 161 परीक्षार्थी पंजीकृत रहे। जिसमें 158 ने परीक्षा दी। जबकि तीन ने परीक्षा छोड़ दी। यहां सावित्री पब्लिक स्कूल परतावल, राशिन स्कूल परतावल, एएसपीएम सुमेरगढ़, दिव्या पब्लिक स्कूल चेहरी व जवाहर नवोदय विद्यालय के बच्चों का परीक्षा केंद्र बनाया गया है। परीक्षा पर्यवेक्षक संत जेवियर्स स्कूल के प्रधानाचार्य रहे। नव जीवन मिशन स्कूल आनंदनगर में तीन विद्यालयों के 256 परीक्षार्थी पंजीकृत रहे। जिसमें तीन ने परीक्षा छोड़ दी। यहां स्कालर एकेडमी स्कूल आनंदनगर, जीएस नेशनल स्कूल आनंदनगर व एमपी पब्लिक स्कूल आनंदनगर के विद्यार्थियों की परीक्षा हुई। सेक्रेट हार्ट स्कूल निचलौल केंद्र पर मार्डन एकेडमी नौतनवा, सेंट जोसेफ स्कूल सिसवा और एसकेएसडी स्कूल सिसवा के परीक्षार्थी शामिल रहे। प्रबंधक जीएन त्रिपाठी ने ने बताया कि परीक्षा सीसीटीवी कैमरे की निगरानी में हो रही है। सोमवार को हिन्दी कोर विषय की परीक्षा में पंजीकृत कुल 214 में 209 परीक्षार्थियों ने परीक्षा में हिस्सा लिया। यहां पांच अनुपस्थित रहे। मार्डन एकेडमी स्कूल नौतनवा में सोमवार को सीबीएसई इंटर हिन्दी विषय की परीक्षा आयोजित की गई। परीक्षा में मदर मरियम स्कूल कोल्हुई के 55 विद्यार्थियों ने परीक्षा दिया। परीक्षा में सभी विद्यार्थी उपस्थित रहे। स्कूल के प्रधानाचार्य जितेश सिन्हा ने बताया कि एक ही स्कूल का सेंटर उनके विद्यालय पर आया था। 55 विद्यार्थियों का रजिस्ट्रेशन था। सभी परीक्षा के दौरान उपस्थित थे। परीक्षा शांतिपूर्ण ढंग से समाप्त हुई है।

मड़हे में लगी आग, एक गाय की मौत दो झुलसी

संवाददाता–श्रावस्ती। अज्ञात कारणों से फूस के मड़हे में आग लग गई। शोर सुनकर मौके पर पहुंचे ग्रामीणों ने कड़ी मशक्कत कर आग पर काबू पाया। लेकिन तब तक मड़हे में बंधी एक गाय की जलकर मौत हो गई जबकि दो गाय गंभीर रूप से झुलस गई। सोनवा थाना क्षेत्र के ग्राम पंचायत गुजरवारा के मजरा माल बोखारा में रविवार की रात में गांव निवासी बुधई के फूस के मड़हे में अज्ञात कारणों से आग लग गई। आग पूरे मड़हे में फैल गई और मड़हा धू धूं कर जलने लगा। अगलगी की घटना देख बुधई शोर मचाने लगा। शोर सुनकर गांव के लोग मौके पर इकट्ठा होकर आग बुझाने में जुट गए। घंटों कड़ी मशक्कत के बाद लोगों ने आग पर काबू पा लिया। जब तक आग बुझाने में सफलता मिली तब तक मड़हे में रखा सारा सामान जलकर राख हो गया। साथ ही मड़हे में बंधी एक गाय की झुलस कर मौत हो गई जबकि दो गाय गंभीर रूप से झुलस गई। बुधई ने सोनवा थाने में तहरीर देकर गांव के ही एक व्यक्ति पर मड़हा फूंकने का आरोप लगाया है।

40 लीटर कच्ची शराब संग दो गिरफ्तार

संवाददाता–श्रावस्ती। अवैध शराब के विरुद्ध चलाए जा रहे अभियान में पुलिस ने कच्ची शराब बरामद कर दो आरोपियों को गिरफ्तार किया। थाना मल्हीपुर की पुलिस टीम अपराधियों की धरपकड़ के लिए क्षेत्र में भ्रमण कर रही थी। इस दौरान पुलिस ने लिंगे पुत्र ओरीलाल निवासी लक्ष्मणपुर कोठी व श्याम बिहारी पुत्र सुकई निवासी लक्ष्मणपुर कोठी थाना मल्हीपुर को 20–20 लीटर कच्ची शराब के साथ गिरफ्तार किया गया। दोनों आरोपियों के विरुद्ध आबकारी अधिनियम में मामला दर्ज किया गया।

एक वारंटी गिरफ्तार

संवाददाता–श्रावस्ती। पुलिस अधीक्षक की ओर से वारंटियों की गिरफ्तारी के लिए आपरेशन धरपकड़ चलाया जा रहा है। जिसके तहत पुलिस ने एक नफर वारंटी को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया। सोमवार को एएसपी के निर्देशन में हरदत्त नगर गिरंट थाने के थानाध्यक्ष प्रमोद कुमार टीम के साथ वारंटियों की धरपकड़ के लिए क्षेत्र में भ्रमण कर रहे थे। इस दौरान पुलिस ने नफर वारंटी मुस्तकीम पुत्र मुंशरीफ निवासी रामपुर बस्ती थाना हरदत्तनगर गिरण्ट को उसके घर से गिरफ्तार कर लिया। गिरफ्तारी के बाद आरोपी को न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत किया गया जहां से उसे जेल रवाना किया गया। गिरफ्तारी टीम में थानाध्यक्ष के साथ उपनिरीक्षक वीरेन्द्र प्रसाद सिंह, मुख्य आरक्षी भारत सिंह शामिल रहे।

पंचमुखी हनुमान मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा को निकाली कलश यात्रा

संवाददाता–बहराइच। नानपारा के रुपईडीहा मार्ग स्थित सतरूपा अष्टभुजा दुर्गा मंदिर में पंचमुखी हनुमान मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा को लेकर सोमवार को कलश यात्रा निकाली गई। यह यात्रा मन्दिर प्रांगण से निकलकर मुख्यमार्ग होते हुए विश्वनाथ मंदिर, राढ़न टोला मन्दिर, बाबा माधव दास नर्मदेश्वर शिव मन्दिर, कायस्थ टोला मन्दिर सहित अन्य मन्दिर में होते हुए पुनः मंदिर प्रांगण पहुंचकर समाप्त हुई। बुधवार को प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा, जबकि मंगलवार को सुंदर कांड पाठ होगा।

भक्तिभाव से पर कलश लेकर क्षेत्र की दर्जनों माताएं व बहने साथ में नौजवान भक्तजन ध्वज पताका, ढोल, मृदंग, नगाड़ा की धुन पर जय श्री राम का जयकारा लगाते हुए चल रहे थे। जयकारे की गूंज से नगर का माहौल भक्तिमय हो गया। मन्दिर अध्यक्ष डीके श्रीवास्तव ने बताया कि मंगलवार को जलाधिवास, ओषधिवास,फलाधिवास, मिष्ठादिवास,एवं शायनाधिवास के बाद सुंदर कांड पाठ का किया जाएगा। बुधवार को पंचमुखी हनुमान मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा की जाएगी। इस अवसर पर मुख्य पुरोहित राम उजागर मिश्रा, बुद्धिसागर वर्मा, अंकुर श्रीवास्तव, डॉ. परमानन्द पांडे, आनंद रस्तोगी, शेफाली श्रीवास्तव, डॉ. वीरांगना कांत श्रीवास्तव, विकास श्रीवास्तव, केशव पांडे, आनन्द श्रीवास्तव आदि अन्य मौजूद रहे।

छह परीक्षार्थियों ने छोड़ी हिन्दी विषय की परीक्षा

संवाददाता–श्रावस्ती। जिले के तीन परीक्षा केन्द्रों में सोमवार से सीबीएसई बोर्ड की परीक्षा शुरू हुई। पहले दिन 12वीं के हिन्दी विषय की परीक्षा कड़ी सुरक्षा में कराई गई। परीक्षा में छह परीक्षार्थी अनुपस्थित रहे। यूपी बोर्ड परीक्षा से तीन दिन पहले सोमवार को सीबीएसई बोर्ड की परीक्षाएं शुरू हुईं। बोर्ड परीक्षा के लिए जिले में तीन परीक्षा केन्द्र बनाए गए हैं। इसमें जवाहर नवोदय विद्यालय सम्हारपुरवा, लव विद्यापीठ खरगौरा व केन्द्रीय विद्यालय भिनगा को परीक्षा केन्द्र बनाया गया है। पहले दिन तीनों परीक्षा केन्द्रों पर 12वीं की हिन्दी विषय की परीक्षा हुई। जिसमें कुल 156 परीक्षार्थी पंजीकृत थे। जिसके सापेक्ष 150 परीक्षार्थी हिन्दी की परीक्षा में शामिल हुए जबकि छह परीक्षार्थियों ने परीक्षा छोड़ दी। तीनों केन्द्रों पर कड़ी सुरक्षा, सीसीटीवी कैमरे की निगरानी में शांतिपूर्ण ढंग से परीक्षा सम्पन्न हुई। परीक्षा के दौरान केन्द्र व्यवस्थापक से लेकर उड़न दस्ते की टीम बारी बारी से परीक्षा केन्द्रों का निरीक्षण किया। केन्द्रीय विद्यालय भिनगा में पंजीकृत 67 परीक्षार्थियों में से 66 उपस्थित व एक परीक्षार्थी अनुपस्थित रहा। नवोदय विद्यालय में पंजीकृत 20 परीक्षार्थियों के सापेक्ष 16 उपस्थित व चार अनुपस्थित रहे। इसी तरह लव विद्यापीठ में पंजीकृत 69 परीक्षार्थियों में से 68 परीक्षार्थी परीक्षा में शामिल हुए। जबकि एक परीक्षार्थी ने परीक्षा छोड़ दी।

चार खंड शिक्षा अधिकारियों का तबादला, चार नए आए

संवाददाता–महराजगंज। अपर शिक्षा निदेशक बेसिक संजय यादव ने प्रदेश भर के 194 खंड शिक्षा अधिकारियों का तबादला गैर जनपद कर दिया है। इसमें महराजगंज के चार खंड शिक्षा अधिकारियों को गैर जनपद भेजा गया है। वहीं दूसरे जिलों में तैनात रहे चार खंड शिक्षा अधिकारियों को अब महराजगंज में तैनात किया गया है।

इसमें महराजगंज के खंड शिक्षा अधिकारी राजकिशोर सिंह को देवरिया, सुधीर कुमार को कुशीनगर, प्रदीप शर्मा को गोरखपुर व विनयशील मिश्र को देवरिया स्थानांतरित किया गया है। वहीं आने वालों में कुशीनगर में तैनात रही खंड शिक्षा अधिकारी अंकिता सिंह, कुशीनगर के आशीष मिश्र, देवरिया के विजय पाल नारायण तिवारी व संतकबीरनगर के वंशीधर सिंह को महराजगंज में तैनात किया गया है।

अपर शिक्षा निदेशक ने सभी स्थानांतरित खंड शिक्षा अधिकारियों को तत्काल प्रभाव से अपनी नई तैनाती वाले जिले में कार्यभार ग्रहण करने का निर्देश दिया है। बीएसए श्रवण कुमार गुप्ता ने बताया कि शासन के निर्देश पर आने वाले खंड शिक्षा अधिकारियों को ज्वाइनिंग व रिलीविंग की कार्यवाही की जाएगी।

दुल्हन करती रही इंतजार, बारात लेकर नहीं आया दूल्हा

संवाददाता–गोण्डा। थानाक्षेत्र के एक गांव में रविवार की देर रात कन्यापक्ष देररात इंतजार करता रहा लेकिन दूल्हा बारात लेकर नहीं आया। सैकड़ों लोगों के लिए बने पकवान बर्बाद हो गए। बताया जा रहा है कि गांव के युवक ने आपत्तिजनक फोटो दूल्हे के मोबाइल पर भेज दी थी। पीड़ित पिता ने थाने में कार्रवाई के लिए तहरीर दी है। फिलहाल पुलिस मामले की जांच में जुटी है। शादी के दिन बारात न पहुंचने का मामला थाना क्षेत्र के एक गांव का है। गांव निवासी एक व्यक्ति ने अपनी बेटी की शादी जिले के थाना कोतवाली देहात के धानी बालपुर निवासी युवक के साथ तय की थी। रविवार को विवाह होना था। कन्यापक्ष ने शादी के लिए टेंट लगवाकर वर पक्ष के स्वागत सत्कार की तैयारियां पूरी कर ली थीं। बताया जाता है कि रविवार देररात तक जब बारात नहीं आई तो परिजनों ने वरपक्ष से बात की। इस पर पता चला कि गांव के किसी युवक ने लड़की की आपत्तिजनक फोटो दूल्हे के मोबाइल पर भेज दी थी। इसके बाद परिजन आरोपी युवक के घर शिकायत करने गए तो उसके घरवालों ने भगा दिया और जान से मारने की धमकी दी। पीड़ित पिता ने थाने में महिला सहित चार लोगों के विरुद्ध आपत्तिजनक फोटो वायरल करने, जान से मारने की धमकी देने का प्रार्थना पत्र देकर कार्रवाई की मांग की है। इस संबंध में थानाध्यक्ष दिनेश सिंह ने बताया कि तहरीर मिली है। मामले की जांच के बाद कार्रवाई की जाएगी।

डिवाइडर से टकराई बाइक, युवक की मौत, साथी घायल

संवाददाता–गोण्डा। लखनऊ हाईवे पर हारीपुर के पास बारात से वापस घर जाते समय दो युवक हादसे का शिकार हो गए। रविवार देर रात उनकी बाइक अनियंत्रित होकर डिवाइडर से टकरा गई। हादसे में एक युवक की मौत हो गई जबकि दूसरा युवक घायल हो गया। करनैलगंज कोतवाली क्षेत्र के गोनवा गांव निवासी 30 वर्षीय संदीप कुमार उर्फ नानबच्चा व 25 वर्षीय अशोक कुमार वर्मा बाइक से तिवारी बाजार बारात गए थे। रात में घर लौट रहे थे। हाईवे पर उनकी बाइक अनियंत्रित होकर डिवाइडर से टकरा गई। सूचना पर पहुंची पुलिस ने दोनों को जिला अस्पताल पहुंचाया। जहां संदीप को चिकित्सक ने देखने के बाद मृत घोषित कर दिया। वहीं अशोक का इलाज चल रहा है। अशोक कुमार वर्मा के मामा के लड़के की बारात पथवलिया से तिवारी बाजार गई थी। दोनों लोग उसी में शामिल होकर वापस घर जा रहे थे। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम को भेजा है।

जालसाजी के दो आरोपियों की जमानत अर्जी निरस्त

संवाददाता–गोण्डा। अपर जिला जज सर्वजीत कुमार सिंह ने जालसाजी के दो आरोपियों की जमानत अर्जी पर्याप्त आधार के अभाव में निरस्त कर दी है। सहायक जिला शासकीय अधिवक्ता अनीता साहू के अनुसार थाना मोतीगंज के अंतर्गत ग्राम बेलावा निवासी इरशाद अली पुत्र इरफान अली सिद्दीकी व मेराज अली पुत्र अरमान अली सिद्दीकी के विरुद्ध धोखाधड़ी व जालसाजी करने के आरोप में वादी शमशुद्दीन ने मुकदमा दर्ज कराया गया। आरोपियों की ओर से अधिवक्ता ने अदालत के समक्ष जमानत याचिका प्रस्तुत किया। अदालत ने अभियोजन व बचाव पक्ष के अधिवक्ताओं की दलीलों व बहस को सुनने के बाद अपराध को गंभीर प्रवृत्ति का करार देते हुए दोनों आरोपियों की जमानत याचिका निरस्त कर दी।

तेज रफ्तार बाइक ने साईकिल में मारी टक्कर, तीन घायल

संवाददाता–गोण्डा। नवाबगंज नानपारा मार्ग पर सोमवार दोपहर में तेज रफ्तार बाइक के सामने अचानक बाइक आ गई। उसे बचाने के प्रयास में अनियंत्रित बाइक साईकिल से टकराकर पलट गई। जिसके चलते साईकिल सवार वृद्ध व बाइक सवार मां बेटे गंभीर रूप से घायल हो गए। घायलों को नवाबगंज स्थित अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

नवाबगंज थाने के नानपारा नवाबगंज मार्ग पर नवाबगंज कस्बे के समीप राजकीय यूनानी चिकित्सालय के पास सोमवार दोपहर दो बजे तेज रफ्तार बाइक के सामने अचानक अचानक साईकिल सवार नवाबगंज की तरफ से जा रहे राजापुर गांव निवासी 55 वर्षीय पाटन को अनियंत्रित बाइक ने टक्कर मार दी। जिसके चलते पाटन, बाइक पलटने से इसी थाने के बीजेगांव निवासी 30 वर्षीय सलामत अली अपनी मां 50 वर्षीय फातिमा घायल हो गए। बाइक सवार मां, बेटे नवाबगंज बाजार शादी का सामान की खरीदारी के लिए आ रहा थे। सभी घायलों को कस्बे स्थित अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

मुख्यमंत्री 21 को आवासीय योजना के साथ 90 करोड़ की परियोजनाओं की देंगे सौगात

संवाददाता–गोरखपुर। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ 21 फरवरी को कालेसर जीरो प्वाइंट के पास गीडा द्वारा विकसित की जा रही बड़ी आवासीय योजना की सौगात देंगे। वह करीब 400 भूखंड की आवासीय योजना गीडा लांच करेगा। परियोजना में फ्लैट के साथ कामर्शियल स्पेस भी शामिल होंगे। इसके साथ ही सीएम गीडा में प्लास्टिक रीसाइकिल फैक्ट्री का शुभारंभ और 90 करोड़ की परियोजनाओं का लोकार्पण और शिलान्यास भी करेंगे। सीएम के कार्यक्रम को लेकर गीडा प्रशासन की तरफ से कालेसर जीरो प्वाइंट के पास सेक्टर 11 में तैयारियां शुरू हो गईं है। वहां सोमवार को जर्मन हैंगर लगाने का काम शुरू हो गया। बता दें कि दो दशक से भी अधिक समय बाद गोरखपुर औद्योगिक विकास प्राधिकरण (गीडा) द्वारा विकसित की जा रही आवासीय योजना में 400 से अधिक परिवारों के मकान का सपना पूरा होगा। कालेसर जीरो प्वाइंट से बमुश्किल एक किलोमीटर की दूरी पर विकसित हो रही योजना में 90 से लेकर 300 वर्ग मीटर तक के भूखंड की उपलब्धता होगी। पहले इस योजना में 350 भूखंड की उपलब्धता थी, लेकिन बदले ले–आऊट के बाद अब करीब 400 भूखंडों का विज्ञापन गीडा प्रशासन द्वारा निकाली जाएगी। गीडा के जिम्मेदारों के मुताबिक, योजना में 90, 120, 150, 180, 250 से लेकर 300 वर्गमीटर के भूखंड होंगे। जहां आवासीय योजना लांच हो रही है, वहां से लखनऊ, वाराणसी, सोनौली से लेकर पूर्वांचल लिंक एक्सप्रेस तक जाना आसान होगा। जमीन की कीमत का आंकलन गीडा प्रशासन की टीम द्वारा किया जा रहा है। प्लॉट के लिए बड़ी संख्या में आवेदनों की उम्मीद को देखते हुए गीडा प्रशासन लाटरी के माध्यम से भूखंडों के आवंटन की तैयारी की है।

आवासीय योजना के साथ ही गीडा में पैकेजिंग के क्षेत्र में बड़ी यूनिट एसडी इंटरनेशनल का विस्तार भी होना प्रस्तावित है। उद्यमी विनय अग्रवाल इस यूनिट में 250 करोड़ रुपये का निवेश कर रहे हैं। यूनिट में प्लास्टिक से लेकर कागज के पैकेजिंग के उत्पाद बनेंगे। यूनिट में पूर्वांचल की पहली प्लास्टिक रीसाइक्लिंग की मशीनें भी लग रही हैं। पूर्वांचल की पहली प्लास्टिक रीसाइक्लिंग यूनिट में सालाना 5000 टन प्लास्टिक को रीसाइकिल किया जा सकेगा। इसके कचरा प्रबंधन में सहूलियत के साथ ही प्लास्टिक के उत्पाद बनाने वाली छोटी यूनिटों को भी सीधा लाभ होगा। नई यूनिट में प्लास्टिक के फूड पैकेजिंग कंटेनर के साथ कागज के भी उत्पाद बनेंगे। उद्यमी विनय अग्रवाल ने बताया कि नई यूनिट में हाईटेक मशीनें जर्मनी और जापान से मंगाई गई हैं। देश की नामी कंपनी अमूल, हल्दीराम, बिकानो, बीकाजी आदि के ऑर्डर पूरी क्षमता के साथ हम पूरी करेंगे। अनुपम मिश्रा, एसडीएम ने कहा कि सीएम योगी आदित्यनाथ का कार्यक्रम 21 फरवरी को मिल गया है। वह आवासीय योजना के साथ गीडा की 90 करोड़ की परियोजनाओं को लोकार्पण और शिलान्यास भी करेंगे। इसके साथ ही एसडी इंटरनेशनल की नई यूनिट का शिलान्यास भी करेंगे।

बार एसोसिएशन का चुनाव आज, हुई तैयारी बैठक

संवाददाता–गोरखपुर। बार एसोसिएशन सिविल कोर्ट के कार्यकारणी के चुनाव के संबंध में सोमवार को एल्डर्स कमेटी की एक आवश्यक बैठक एल्डर्स कमेटी के चेयरमैन राधेश्याम पांडेय की अध्यक्षता में हुई।

बैठक में उन्होंने बताया कि मंगलवार को मतदान सुबह दस बजे से चार बजे तक होगा। चुनाव में मतदान के लिए बार काउंसिल ऑफ उत्तर प्रदेश द्वारा जारी मूल सीओपी परिचय पत्र या प्रमाणपत्र लाना आवश्यक है। अन्य कोई परिचय पत्र मान्य नहीं होगा। इस चुनाव में कुल 3001 मतदाता मतदान करेंगे। मतदान के लिए कुल छह बूथ बनाए गए है। बैठक में महेंद्र प्रताप सिंह, अरविंद नाथ पांडेय, हरिप्रकाश मिश्र, नरसिंह प्रसाद शर्मा, हरिनंदन श्रीवास्तव, शंभू नाथ दूबे, कमल शंकर पति त्रिपाठी, प्रभु दयाल सिंह आदि उपस्थित रहे।

केन्द्रीय वित्तमंत्री निर्मला सीतारमण 22 को करेंगी आयकर भवन का लोकार्पण

संवाददाता–गोरखपुर। केन्द्रीय वित्त राज्यमंत्री निर्मला सीतारमण 22 फरवरी को गोरखपुर के सिविल लाइंस क्षेत्र में बने आयकर विभाग के नये भवन का लोकार्पण करेंगी। इस दौरान मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और केन्द्रीय वित्त राज्यमंत्री पंकज चौधरी की उपस्थिति भी रहेगी। इस कार्यक्रम को लेकर विभाग की तरफ से तैयारियां की जा रही है।

लोकार्पण कार्यक्रम में केन्द्रीय प्रत्यक्षकर बोर्ड के अध्यक्ष नितिन गुप्ता, बोर्ड की सदस्य श्रीमती प्रज्ञा सहाय सक्सेना और उत्तर प्रदेश पूर्वी के प्रधान मुख्य आयकार आयुक्त देविंदर सिंह चौधरी की उपस्थिति रहेगी। कार्यक्रम दिन में 2.30 बजे आयोजित है। आयकर के नए भवन में कई नई सुविधाएं मिलेंगी। यहां प्रधान आयकर आयुक्त भी बैठेंगे। सिविल लांइस स्थित आयकर के नए भवन में लोगों के लिए मनोरंजन कक्ष, आयकर सेवा केंद्र, कैंटीन आदि की सुविधा रहेगी। भवन में दो लिफ्ट लगाए गए हैं। मुख्यमंत्री का कार्यक्रम मिलने के बाद तैयारियां शुरू कर दी गई हैं। आयकर भवन को दुल्हन की तरह सजाया जा रहा है। इसके लिए दिल्ली से लेकर लखनऊ तक के आला अधिकारी तैयारियों में जुट गए हैं।

अनुरक्षण के मद से डेढ़ करोड़ से अधिक रुपये का हुआ भुगतान

संवादाता–संतकबीरनगर। जिले का स्वास्थ्य विभाग इन दिनों एनआरएचएम अनुरक्षण के तहत कराए गए कार्यों को लेकर फिर चर्चा में आ गया है। जिले में अनुरक्षण के मद से डेढ़ करोड़ रुपये से अधिक का भुगतान हुआ है। शासन ने उक्त मद के तहत कराए गए कार्यों के भुगतान पर तत्काल प्रभाव से रोक लगा दी है। इसे लेकर स्वास्थ्य महकमे में दिन भर चर्चा होती रही। हालांकि अधिकारी इस तरह का पत्र आना स्वीकार नहीं कर रहे हैं। यदि जनपद में इसे लेकर जांच हुई हो तो कइयों की गर्दन फंस सकती है। एनआरएचएम के अनुरक्षण के तहत होने वाले कार्यों को लेकर गैर जनपदों में मामले में चल रहे थे। इसकी विस्तृत जांच कराई गई तो इसकी चपेट में 14 जनपद आ रहे हैं। इन जनपदों में संतकबीरनगर भी शामिल है। प्रकरण को लेकर अधीक्षक अभियंता चिकित्सक एवं स्वास्थ्य सेवा उत्तर प्रदेश राकेश त्रिपाठी ने सीएमओ को पत्र भेजकर कर अनुरक्षण कार्यों के भुगतान पर रोक लगा दी है। इस मद के तहत जिले में कराए गए कार्यों के बारे में बात करें तो विभागीय सूत्रों के अनुसार एक वर्ष में सीएचसी, पीएचसी, सब सेंटर की मरम्मत के अलावा सीएमओ कार्यालय में मरम्मत व अन्य मद में डेढ़ करोड़ रुपए से अधिक का भुगतान हो चुका है। इतना ही नहीं इस मद से धड़ल्ले से कार्य चल भी रहे हैं। शासन के पत्र आने से अब स्वास्थ्य विभाग में खलबली मची है। सीएमओ डा. रामानुज कन्नौजिया ने कहा कि अभी तक भुगतान पर रोक लगाने के लिए शासन से कोई पत्र नहीं आया था, लेकिन समाचार पत्रों के माध्यम से मामला संज्ञान में आया है। जैसा शासन का निर्देश होगा वैसा किया जाएगा। इन दिनों कुछ कार्य चल भी रहे हैं।

राम मंदिर में पूजा के नियम निर्धारित

संवाददाता–अयोध्या। राम मंदिर में निर्धारित आचार संहिता के अनुपालन की प्रक्रिया अब शुरू हो गयी। रामलला की प्राण–प्रतिष्ठा के बाद से ही यहां दर्शनार्थी की भीड़ के कारण नवीन व्यवस्थाएं नहीं लागू हो पा रही हैं। हाल यह है कि सुबह साढ़े चार बजे रामलला के मंगला आरती दर्शन के लिए एक सौ पास निर्गत करने की व्यवस्था के बाद भी ब्रह्ममुहूर्त से ही श्रद्धालु गण कतारबद्ध हो जा रहे हैं। फिलहाल माघ शुक्ल प्रतिपदा से शुरू हुए गुप्त नवरात्र के अनुष्ठान क्रम में यहां सप्तमी पर्व से आचार संहिता के अनुसार पूजन विधि शुरू की गयी है। इस प्रक्रिया में बालक रामलला समेत उत्सव विग्रह एवं विराजमान रामलला का प्रतिदिन दस लीटर सरयू जल से अभिषेक भी शुरू हो गया है।

भक्ति पथ पर गिरी फैंसी लाइट, स्ट्रीट वेंडर घायल

संवाददाता–अयोध्या। रामनगरी में बड़ा हादसा टल गया। शृंगारहाट बैरियर से हनुमानगढ़ी की ओर जाने वाले भक्ति पथ पर भारी भरकम लोहे के एंगल से लगी फैंसी लाइट के गिरने से स्ट्रीट वेंडर घायल हो गया। उसे तत्काल श्रीराम अस्पताल पहुंचाया गया, जहां से उसे जिला चिकित्सालय रेफर कर दिया गया। गनीमत रही कि घटना के दौरान श्रद्धालुओं की भीड़ कम थी। हालांकि वहां मौजूद कुछ श्रद्धालुओं को हल्की चोटें आई हैं। स्थानीय व्यापारियों ने बताया कि बंदरों के झुंड में लड़ाई के चलते छतों के छज्जों पर लोहे के एंगल में लगी फैंसी लाइट टूटकर गिर गई। भक्ति पथ पर ही ठेले पर पपीता बेच रहे सुशील सोनकर निवासी चकर्तीर्थ चपेट में आ गया।

अदालती नोटिस

वाद के निपटारे के लिये सम्मन (आदेश 5 के नियम 1 और 5 व्या0प्र0 संहिता 1908)

मूलवाद संख्या 225/2023

न्यायालय– श्रीमान सिविल जज (जू0डि0) स्थान–बांसी जिला–सिद्धार्थनगर

फागू

बनाम

सुभावती आदि

1. सुभावती पत्नी चैतू 2. दूधनाथ 3. राम औतार 4. सूर्यनाथ 5. जितेन्द्र पुत्रगण चैतू साकिनान मौजा जनियाजोत तप्पा चवंर परगना बांसी पूरब तहसील बांसी जनपद सिद्धार्थनगर

तारीख पेशी 18–03–2024

प्रतिवादी ने आपके विरूद्ध के लिये वाद संस्थित किया है। आपको इस न्यायालय में दिनांक **18–03–2024** को दिन में 10 बजे वाद का उत्तर देने के लिये उपसंजात (हाजिर) होने के लिये समन किया जाता है। आप न्यायालय में स्वयं या किसी ऐसे अधिवक्ता प्लीडर द्वारा उप संजात हो सकते हैं। जिसे सम्यक अनुदेश दिये गये हों और जो बात से सम्बंधित सभी सारवान प्रश्नों का उत्तर दे सके या जिसके साथ ऐसा कोई व्यक्ति हो जो ऐसे सब प्रश्नों का उत्तर दे सके न्यायालय में आपके उप संजात के लिये जो दिन नियत किया गया है वह इस वाद के अन्तिम निपटारे के लिये नियत दिन है। इसलिये आपको उस दिन अपने उन सब साक्षियों को या उन सब दस्तावेजों को पेश करने के लिये तैयार रहना चाहिये जिन पर आप अपनी प्रतिरक्षा के लिये निर्भर रहना चाहते हैं।

आपको सूचित किया जाता है कि यदि अगर ऊपर बतायी गयी तारीख को इस न्यायालय में उपसंजात नहीं होंगे तो वाद की सुनवाई और उसका निपटारा आपकी अनुपस्थिति में किया जायेगा।

यह आज तारीख को मेरे हस्ताक्षर और न्यायालय की मुद्रा लगाकर दिया गया है।

न्यायाधीश

जो संसार में रहकर योगी नहीं बन सकते उन्हें हिमालय पर भी सफलता मिलने में संदेह रहेगा

–भारतीय बस्ती संवादाता– मुंडेरवा (बस्ती)। स्थानीय थाना क्षेत्र के ग्राम दीक्षापार में आयोजित श्रीमद् भागवत कथा के तृतीय दिवस पर राजा प्रियव्रत की कथा सुनाते हुए कहा की मनुष्य को संसार में रहकर विकारों को त्याग करने का प्रयास करना चाहिए सब कुछ होते हुए भी अनाशक्त का भाव रखना चाहिए । तभी संसार से मुक्त हो पावेगा।

उक्त प्रतिक्रिया महाकाल से पधारे महामृत्युंजय पीठाधीश्वर स्वामी प्रणव पुरी जी महाराज ने श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए व्यक्त किया ।उन्होंने जड़ भारत की कथा पर भी प्रकाश डाला और बताया कि संसार पागल को पागल समझता है और पागल सारें संसार को पागल समझता है। असली पागल कौन है यह सोचनीय विषय है। जड़ भरत जी ने संसार के किसी भी गुण को नहीं अपनाया अर्थात यह संसार आपसे नहीं आपके गुणों से प्रेम करता है। जिस समय आपके द्वारा कुछ भी प्राप्त होना बंद हो जाएगा आपके अपने भी आपके प्रति व्यवहार बदल देंगे ।उन्होंने कहा कि यही स्वार्थी संसार का सत्य है ।आगे स्वामी जी ने भगवान के नाम की महिमा बताते हुए अजामिल का प्रसंग सुनाया। आजमिल जीवन भर पाप करता रहा किंतु अंत समय में प्रभु का स्मरण करने से सम यातना से बच गया जो प्रभु एक क्षण में कृपा कर सकते हैं उनका प्रतिक्षण स्मरण करते रहना चाहिए। कलियुग में तो नाम की ही महिमा है ।मुख्य यजमान के रूप में रूप में कैप्टन रमाकांत शुक्ल, श्रीमती चंद्रावती देवी, तथा परिवर के अन्य सदस्यों के साथ प्रवचन के समय उमाकांत शुक्ल, शशिकांत शुक्ल, अमित शुक्ल, लक्ष्मीकांत शुक्ल, राम अवध पांडे, रामचंद्र शुक्ल, चिंता हरण शुक्ल, मोहन शुक्ल मेवालाल शुक्ल, सहित तमाम महिला व पुरुष उपस्थित रहे। कथा के मुख्य आयोजक उमाकांत शुक्ल ने समस्त क्षेत्र वासियों से कथा श्रवण करने की अपील किया है।

मगहर स्टेशन को टर्मिनल बनाने की मांग

संवाददाता–संतकबीरनगर।

अदालती नोटिस

सम्मन बरगज इनफिसाल मुकदमा (आर्डर 5 कायदा 1 व 5 मजमुआ जाप्ता 200 ई0)

नम्बर मुकदमा– 271

धारा 34 उ0प्र0ग0सं0

अदालत– श्रीमान नायब तहसीलदार सदर बस्ती

संजय आदि

बनाम

महादेव

मौजा बस्ती खास तप्पा हवेली परगना बस्ती पूरब तहसील व जिला–बस्ती 1. रामलखन पुत्र रमेश्वर साकिन मिश्रौलिया तप्पा हवेली 2. पवन कुमार पुत्र सीताराम 3. अनिल कुमार 4. रमेश कुमार 5. राम कुमार पुत्रगण लक्ष्मी प्रसाद 6. चन्द्रा देवी पत्नी सत्यनरायन 7. श्रीमती हीरा श्रीवास्तव पत्नी शिव प्रसाद श्रीवास्तव 8. मुरलीधर पुत्र श्रीराम 9. बंशीधर पुत्र श्रीराम साकिन बस्ती खास तप्पा हवेली परगना बस्ती पूरब तहसील व जिला–बस्ती 10. राधेश्याम पुत्र रामदेव स्टेशन रोड बस्ती खास 11. गौरीशंकर पुत्र जोखू साकिन सिसवा फताहुल्लाह हाल मुकाम बस्ती खास तप्पा हवेली परगना बस्ती पूरब तहसील व जिला–बस्ती 12. जुनैद अहमद पुत्र मो0 अली साकिन नई बेगम खैर कालोनी नजदीक एनआर होटल गांधी नगर बस्ती जयपुरवा तप्पा हवेली परगना बस्ती पूरब तहसील व जिला–बस्ती

तारीख पेशी 22–02–2024

वाजेह हो कि ने आपके नाम एक नालिस बाबत दायर की है। लिहाजा आपको हुक्म होता है कि आप बतारीख 22 माह 02 सन 2024 ई0 बवक्त 10 बजे दिन बमुकाम असालतन या मारफत वकील के जो मुकदमे के हालत से करार वाकई वाकिफ किया गया हो और जो कुल उमूर अहम मुतल्लिका मुकदमा जबाब दे सके या जिसके साथ कोई और सख्श हो जो कि जबाब ऐसे सवालात का दे सके हाजिर हों और जबाबदेही दावा कीजिये और हरगाह वही तारीख जो आपके हाजिरी के लिये मुकर्रर है वास्ते इनफिसाल कत्तई मुकदमा के तजवीज हुई है और आपको लाजिम है कि उसी रोज जुमला दस्तावेज को जिनको आप अपनी जबाबदेही के तहत इस्तदलाल करना चाहते हों पेश करें।

आपको इत्तिला दी जाती है कि अगर बरोज मजकूर आप हाजिर न होंगे तो मुकदमा बगैर हाजिरी आपके मसमुआ और फैसला होगा।

बसख्त मेरे दस्तखत और मुहर अदालत के आज बतारीख माह सन 20 ई0 जारी किया गया।

द0 हाकिम

मगहर स्टेशन पर मेल एक्सप्रेस ट्रेनों का ठहराव न होने के कारण पर्यटकों को भारी कठिनाई का सामना करना पड़ता है।

अंतरराष्ट्रीय सनातन धर्म प्रचारिका अर्चना त्रिपाठी ने पूर्वोत्तर रेलवे, पश्चिम रेलवे और मध्य रेलवे के महाप्रबंधक के माध्यम से रेल मंत्री को पत्र लिखा है कि महान समाज सुधारक संत कबीर की महापरिनिर्वाण स्थली पर्यटन स्थल के रूप जाना जाता है। इसे अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन केन्द्र के रूप में विकसित किया जाना आवश्यक है। कबीर निर्वाण स्थली के निकट पूर्वोत्तर रेलवे का मगहर स्टेशन आदर्श स्टेशनों की श्रेणी में आता है। मगहर स्टेशन यात्री सुविधाओं से वंचित है। इस स्टेशन पर कोई भी मेल एक्सप्रेस ट्रेन नहीं रुकती है। पत्र में यह भी उल्लेख किया है कि कबीर समाधि की महत्ता और ऐतिहासिकता के दृष्टिगत मगहर स्टेशन पर मेल एक्सप्रेस ट्रेनों का ठहराव सुनिश्चित किया जाए। जिससे बाहर से आने वाले पर्यटक संत कबीर की निर्वाण स्थली पर आसानी से पहुंच सकें। इसके साथ ही मगहर स्टेशन को टर्मिनल बना कर यहां से पुरी, प्रयागराज, कटरा आदि आध्यात्मिक और धार्मिक स्थलों से जोड़ा जाए। इससे देश के अन्य स्थानों से सनातनियों को संत कबीर की निर्वाण स्थली का दर्शन मिल सके।

जिले में संतकबीर महापरिनिर्वाण स्थली कबीर चौरा मगहर ऐतिहासिक पर्यटन स्थल है, जो पूर्वोत्तर रेलवे के गोरखपुर–लखनऊ रेल खण्ड पर स्थित मगहर रेलवे स्टेशन के निकट स्थित है। वहां प्रतिदिन पर्यटकों का आना–जाना होता है। मगहर स्टेशन पर मेल एक्सप्रेस ट्रेनों का ठहराव न होने के कारण पर्यटकों को भारी कठिनाई का सामना करना पड़ता है।

दैनिक भारतीय बस्ती

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक प्रदीप चन्द्र पाण्डेय द्वारा दर्पण प्रिन्टिंग प्रेस वि0. नया हाल 1–4 A लोहिया काम्पलेक्स जिला पंचायत भवन गांधीनगर बस्ती (उ.प्र.) से मुद्रित एवं प्रकाशित।

सम्पादक दिनेश चन्द्र पाण्डेय

प्रबन्ध सम्पादक–दिनेश सिंह

संयुक्त सम्पादक–प्रदीप चन्द्र पाण्डेय

अयोध्या–फैजाबाद कार्यालय–

चतुर्मुखी मंदिर परिसर लक्ष्मण घाट अयोध्या–फैजाबाद

लखनऊ कार्यालय–

आशियाना चौराहा, एल.डी.ए. कालोनी, सेक्टर एच. कानपुर रोड लखनऊ।

गोरखपुर कार्यालय–

इलाहीबाग गोरखपुर।

मो09450567450 9336715406,

ई.मेलbhartiyabasti@yahoo.com

bhartiyabasti@gmail.com

कार्यालय नगर पंचायत, नगर बाजार, बस्ती।

ई–निविदा सूचना

एतद्द्वारा समस्त ठेकेदारों को सूचित किया जाता है, कि नगर पंचायत नगर बाजार, बस्ती में राज्य वित्त आयोग योजना के अन्तर्गत प्राप्त धनराशि से नाली, सी०सी० सडक, कान्हा गौशाला जाने वाली सडक एव पंचायत भवन के मरम्मत का कार्य, कराया जाना हैं, जिसके लिए आनलाइन निविदा आमंत्रित की जाती है। कार्य से सम्बन्धित निविदा प्रपत्र बेवसाइट http://etender.up.nic.in पर उपलब्ध होगा। बेवसाइट पर उपलब्ध निविदा नोटिस में धरोहर धनराशि, निविदा डालने की तिथि, समय, कार्य करने की अवधि एवं निविदा लागत तथा निविदा के विस्तृत नियम एवं शर्तों का उल्लेख है, कार्य का विवरण निम्नलिखित हैः–

क्रमांक	कार्य का नाम	योजना का नाम	अनुमानित लागत (लाखों में)	धरोहर धनराशि 10 प्रतिशत	निविदा प्रपत्र का मूल्य (जी0एस0टी0) सहित)	कार्य पूर्ण करने की अवधि
1	वार्ड सं0–03 जे०पी० नगर बारीजोत पिच मार्ग से निर्माणाधीन कान्हा गौशाला तक मिट्टी सोलिंग का कार्य।	राज्य वित्त	9,92000.00	99,200.00	1170.00	6 माह
2	वार्ड सं0 15 दीनदयाल नगर में छटठी माता स्थान से रामजजन के मकान होते हुए चन्दो ताल तक नाली ढक्कन सहित निर्माण कार्य।	राज्य वित्त	9,94000.00	95,400.00	1126.00	6 माह
3	वार्ड सं0–13 श्यामा प्रसाद मुखर्जी नगर में नूरूल के मकान से डिवहारे बाबा के स्थान होते हुये हाजी आसिम के मकान तक सी०सी० सडक व मोहन्ती दूबे के मकान से नाली तक नाली निर्माण कार्य ढक्कन सहित।	राज्य वित्त	7,56000.00	75,600.00	892.00	6 माह
4	वार्ड सं0–03 जे०पी० नगर बकईनियादीप में पंचायत भवन के मरम्मत का कार्य ।	राज्य वित्त	6,33000.00	63,300.00	747.00	6 माह

ई–निविदा (टेक्निकल एवं फाइनेन्शियल) निम्नलिखित विवरण के अनुसार वेबसाइट http://etender.up.nic.in पर आनलाइन के माध्यम से आमंत्रित की जाती है। ई–निविदा के संबंध में विस्तृत जानकारी कार्यालय नगर पंचायत नगर बाजार बस्ती से कार्यालय समय एवं कार्य दिवस पर की जा सकती है।

क्रमांक	वेबसाइट पर ई–निविदा प्रकाशन की तिथि व समय	तिथि	समय
1	ई–निविदा डाउनलोड की प्रारम्भ तिथि/समय	21–02–24	13:00 बजे
2	ई–निविदा अपलोड की प्रारम्भ तिथि/समय	21–02–24	13:00 बजे
2	ई–निविदा अपलोड की अन्तिम तिथि/समय	04–03–24	13:00 बजे
4	ई–निविदा खोलने की तिथि/समय	04–03–24	14:00 बजे

अधिशाषी अधिकारी

नगर पंचायत नगर बाजार बस्ती।

नीलम सिंह

अध्यक्ष

नगर पंचायत नगर बाजार बस्ती।

पत्रांक 543(4)/ न0पं0न0बा0/2023–24

दिनांक 17–02–2024

बेदखली सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है प्रार्थी सभापति उपाध्याय पुत्र श्री रामकरन ग्राम– उभाई पोस्ट– भदावल तहसील हर्रैया जनपद बस्ती का निवासी हूं। विनोद उपाध्याय, अशोक उपाध्याय, वृजेश उपाध्याय मेरे पुत्रगण हैं और श्रीमती अर्चना पत्नी स्वर्गीय दिनेश पुत्रबधू हैं। दिनांक 17–02–2024 को शपथ पत्र के माध्यम से मैं चारो लोगों को अपने चल व अचल सम्पत्ति से बेदखल कर रहा हूं। अपने किसी भी कृत्य के लिये वे स्वयं जिम्मेदार होंगे।

कार्यालय ग्राम पंचायत खेमराजपुर विकास खण्ड कप्तानगंज–बस्ती।

अल्पकालिक निविदा सूचना

वित्तीय वर्ष 2023–24 में ठोस तरल अपशिष्ट प्रबन्धन (S.L.W.M.) केन्द्रीय वित्त/राज्य वित्त/मनरेगा स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण) फेज–2 के अन्तर्गत स्वीकृत कार्य हेतु ई–रिक्शा, साइकिल रिक्शा, कूड़ेदान, प्लास्टिक बैंक, सफेद सीमेन्ट, गिट्टी, प्रथम श्रेणी ईंट, रोडा, सीमेन्ट, रेट्रोफिटिंग मोरंग, बालू, इण्टरलाकिंग ईट सरिया, लोहे का जाल हयूम पाइप वाल पुट्टी टीन चादर बजरफुट बजरी वाल पेटिंग प्लास्टिक पाईप कलेक्शन सेंटर हैण्डपम्प मरम्मत, रिबोर इलेक्ट्रानिक मेटेरियल आदि सामानों की आपूर्ति हेतु इच्छुक व मान्य आपूर्तिकर्ता दिनाकः 20.02.2024 से 26.02.2024 तक निविदा कार्यालय में जमा कर सकते हैं। जो दिनाक 26.02.2024 सायं 12:30 बजे कार्यालय में खोली जायेगी। प्रतिबन्ध जो दिनाक नियम व शर्तें एवं अन्य विवरण कार्य दिवस में ग्राम पंचायत कार्यालय से संपर्क कर सकते हैं।

नोटः– निविदा को बिना कारण बताये स्वीकार/अस्वीकार करने का अधिकार ग्राम प्रधान व सचिव में निहित होगा।

ग्राम प्रधान–राममनोरथ

ग्राम पंचायत- खेमराजपुर

विकास खण्ड कप्तानगंज, बस्ती

सचिव/ग्रां.प्र.अ.–मंजू यादव

ग्राम पंचायत- खेमराजपुर

विकास खण्ड कप्तानगंज, बस्ती

पत्रांक मेमो /19.02.2024 वित्तीय वर्ष 2023–24